

$\Delta 2:864$   
15FG



Δ2:864 1929

15F6

riha. Ramya Eha  
was har i



$\Delta 2: 864$ 

1929

• • • • •

[illegible]







॥ श्रीः ॥

# लघुपाराशरी

श्री हिन्दू विश्वविद्यालय ज्योतिष शास्त्राध्यापक-  
लघुज्योतिषाचार्यतीर्थोपाधिद्वयपण्डित ओम्नो-  
पनामकरामयत्नशर्मकृतसंस्कृतभाषाटीकाद्वय  
सम्बलिता ।

तेनैव संशोधिता

तथा

मध्यपाराशरी

सहिता च ।

## LAGHU PARASARI,

AND WITH HIS OWN ( two ) SANSKRIT and BHASHA

COMMENTARIES BY

RAM YATNA OJHA,

PROFESSOR OF

ASTRONOMY & ASTROLOGY

OF

BANARAS HINDU UNIVERSITY, BENARES.

AND WITH

MADHYA PARASARI

1926.

( All Rights Reserved. )

HARI DAS BAIJ NATH DASS BOOK SELLER and PUBLISHER.  
KACHAURI GALT, Benares City, U. P.



SRI JAGADGURU VISHWARADHYA  
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR  
LIBRARY,

Jangamwadi Math, VARANASI,

Acc. No.

~~248~~ 3711

1929



॥ श्रीः ॥

# ❖❖ लघुपाराशरी ❖❖

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रधान ज्यौतिष शास्त्राध्यापक-  
लब्धज्यौतिषाचार्यतीर्थोपाधिद्वयपण्डित ओम्नो-

पनामकरामयन्नशर्मकृतसंस्कृतभाषाटीकाद्वय

सम्बलिता ।

तेनैव संशोधिता

तथा

मध्यपाराशरी

सहिता च ।

राम. य. ओ. शास्त्री

## LACHU PARASARI,

EDITED WITH HIS OWN (two) SANSKRIT and BHASHA

COMMENTARIES BY

RAM YATNA OJHA,

PROFESSOR OF

ASTRONOMY & ASTROLOGY

OF

BENARES HINDU UNIVERSITY, BENARES.

AND WITH

MADHYA PARASARI.

1926.

( All Rights Reserved ).

Registered according to Act XXV. of 1867.

पुस्तकालय

पुस्तकालय

कचोड़ी



0-10-6

Δ2: 864  
15F6

---

Published by Haridas Baijnathdas,  
Bookseller & Publisher

Kachaurigali, Benares City, U. P.

Printed by B.L. Pawagi at the Hitchintak Press, Ramghat,  
Benares City.

---

SRI JAGADGURU VISHWABHADRA  
JNANA SIMHASANA JNANAMANDIR  
LIBRARY

Jangamawadi Math, Varanasi

Acc. No. .... 1929 .....



## ॥ भूमिका ॥

कीर्त्याप्रकाशितविदिक् विबुधावालमालया सुसंयुक्तः ।  
 शास्त्रसुधां वितरिष्यन् काश्यां श्रीमत्सुधाकरो जयति ॥ १ ॥  
 आसीत्काश्यां सकल-विवुधैः पूजितो लोकमान्यै—  
 भूभृद्वन्द्यो दशरथसुताराधने दत्तचित्तः ।  
 लोकेक्ष्यामाचरण इति यः ख्यातसत्कीर्तिधामा  
 तत्पुत्रोस्ति प्रसारितयशश्श्रीरयोध्याधिनाथः ॥ २ ॥  
 तदंग्रिकमलध्यानादवाप्तज्ञानलेशतः ।  
 उडुदायप्रदीपस्य कृत्वा व्याख्यां सुनिर्मलाम् ॥ ३ ॥  
 मध्यपाराशरीयुक्तां सप्ताक्षिवसुचन्द्रके ।  
 शाके श्रीरामयत्नेन विश्वनाथे समर्पिता ॥ ४ ॥

लघुपाराशरी ( उडुदायप्रदीप ) ग्रन्थ दशा के विचार के लिये तथा भाग्य योग और मारक योग के विचार के लिये जैसा उत्तम है वैसा प्रायः सभी को विदित ही है पर इसकी कोई उत्तम टीका जिससे लोगों को ठीक इसके आशय का ज्ञान हो, नहीं थी यह देख मैंने इस टीका को बनाकर और इसके योगों के उदाहरण रूप मध्यपाराशरी को भी बड़े परिश्रम से ढूँढ़ कर इसके साथ मिला करके परम योग्य वैजनाथदास को द्वितीयसंस्करण को प्रकाशित करने के लिये दिया । मैं आशा करना हूँ कि इसको पण्डित लोग अपना प्रिय बनावेंगे और मेरी अल्पबुद्धि के अनुसार जो कहीं भूल हो गई होगी उसको क्षमा करेंगे ।

रामयत्न ओझा

१।५।२६



## Chapter II

1. The first part of the chapter is devoted to the study of the properties of the function  $f(x)$  which is defined by the equation

$$f(x) = \frac{1}{x} \int_0^x t f(t) dt$$

where  $f(t)$  is a continuous function of  $t$  in the interval  $[0, \infty)$ .

It is shown that  $f(x)$  is a continuous function of  $x$  in the interval  $[0, \infty)$ .

2. The second part of the chapter is devoted to the study of the properties of the function  $f(x)$  which is defined by the equation

$$f(x) = \frac{1}{x} \int_0^x t f(t) dt$$

where  $f(t)$  is a continuous function of  $t$  in the interval  $[0, \infty)$ .

It is shown that  $f(x)$  is a continuous function of  $x$  in the interval  $[0, \infty)$ .

3. The third part of the chapter is devoted to the study of the properties of the function  $f(x)$  which is defined by the equation

$$f(x) = \frac{1}{x} \int_0^x t f(t) dt$$

where  $f(t)$  is a continuous function of  $t$  in the interval  $[0, \infty)$ .

It is shown that  $f(x)$  is a continuous function of  $x$  in the interval  $[0, \infty)$ .

4. The fourth part of the chapter is devoted to the study of the properties of the function  $f(x)$  which is defined by the equation

$$f(x) = \frac{1}{x} \int_0^x t f(t) dt$$

where  $f(t)$  is a continuous function of  $t$  in the interval  $[0, \infty)$ .

It is shown that  $f(x)$  is a continuous function of  $x$  in the interval  $[0, \infty)$ .

5. The fifth part of the chapter is devoted to the study of the properties of the function  $f(x)$  which is defined by the equation

$$f(x) = \frac{1}{x} \int_0^x t f(t) dt$$

where  $f(t)$  is a continuous function of  $t$  in the interval  $[0, \infty)$ .



॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

## ❀ लघुपाराशरी ❀

संस्कृत-भाषा-टीका द्वयसम्बलिता

श्रीपतिं विघ्ननाथं च वाग्देवीं सर्वकामदाम् ।

गुरुन् वाग्निभवप्राप्त्यै प्रणमामि पुनः पुनः ॥१॥

उडुदायप्रदीपाख्ये गुह्यार्था ये बुधैः कृताः ।

लब्ध्वा गुरुकृपालेशात् विवृणोमि समासतः ॥२॥

सिद्धान्तमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः ।

शोणाधरंमहः किञ्चिद् वीणा धरमुपास्महे ॥१॥

अत्र वयमित्यग्रिमश्लोकेन सम्बन्धः पराशरम-  
तानुयायिनां मध्ये कश्चिद्ग्रन्थकारः ग्रन्थारंभे विघ्नविघा-  
ताय मङ्गलमाचरति । वयं किञ्चिन्महः किञ्चित्तेजः  
उपास्महे उपासयामः कथं भूतं सिद्धान्तम् वादिप्रति-  
वादिभिर्निश्चितं यस्यास्तित्वम् । औपनिषदम् उपनिषदि  
भवं वेदप्रतिपाद्यम् । परमेष्ठिनः ब्रह्मणः शुद्धान्तं स्त्री  
रूपम् । शोणाधरं शोणमारक्तं अधरोष्ठं यस्यतत् इत्य-  
नेनातिशयगौरववर्णनं प्रतिपादितम् पुनः वीणाधरं वीणा  
वाद्यविशेषः तांधरतीति तत् अनेन सर्वकर्तृत्वं ध्वनि-  
तम् । उक्तं च वीणावादनतत्त्वज्ञः स्वरजातिविशारदः



तालज्ञाश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छतीति । अर्थात् सरस्वतीमुपास्महे ॥ १ ॥

मैं वादी और प्रति वादी से निश्चित वेद प्रतिपाद्य ब्रह्मा का स्त्री रूप लाल ओष्ठ अर्थात् गौर वर्ण वीणा का धारण करने वाला ऐसा किसी तेज की अर्थात् सरस्वती की उपासना करता हूँ ॥१॥

वयं पाराशरीं होरामनुसृत्य यथामति ।

उडुदायप्रदीपाख्यं कुर्मो दैवविदां मुदे ॥ २ ॥

वयं यथामति स्वबुद्ध्यनुरूपं पाराशरीं पराशरप्रोक्तां होरां जातक शास्त्रं अनुसृत्य यथावद्विचार्य तदनुरूपं दैवविदां दैवज्ञानां मुदे हर्षाय उडुदाय प्रदीपाख्यं उडुनि नक्षत्राणि तेषां वशतः ये दायाः फलानि तत्प्रतिपादकग्रन्थेषु दीपइवदीपः प्रकाशकः उडुदायप्रदीपः आख्या संज्ञा यस्य तम् ग्रन्थं कुर्मो विरचयामः ॥ २ ॥

मैं पाराशर ऋषि के बनाये होरा शास्त्रों को यथावद्विचार कर उडुदाय प्रदीपनाम ग्रन्थ को पण्डितों के विनोदार्थ बनाता हूँ ॥२॥

फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण विवृण्महे ।

दशाविंशोत्तरी चात्रग्राह्या नाष्टोत्तरी मता ॥३॥

अत्रास्मिन्ग्रन्थे नक्षत्रदशाप्रकारेण नक्षत्रदशावशतः फलानि विवृण्महे फलविवरणं कुर्मः तत्र दशा विंशोत्तरी-ग्राह्या अष्टोत्तरी न मता न संमता । अर्थादत्र विंशोत्तरी-दशैवमुख्या । तत्प्रकारस्तु ग्रन्थान्तरात् ।



‘कृत्तिकादिषु यथोत्तरं रविश्चन्द्रभूमिसुतराहुमन्त्रिणः’ ।  
 सौरिसोमसुतकेतुभार्गवाः प्राक्तनैर्निगदिता दशाधिपाः ।  
 षड्दशाश्वधृतिभूपगोमहीसप्तचन्द्रनगविंशतेर्मिताः ।  
 सूर्यचन्द्रकुजराहुमन्त्रिणां सौरिसौम्यशिखिनां भृगोस्तथा ।  
 अथदशाभुक्तभोग्यानयनम् । ग्रन्थान्तरे ।  
 निजजन्मनि या दशा मितिर्जनिभस्येतघटीसमाहृता ।  
 सकलर्क्षघटीविभाजिता जनिभुक्ताहि दशा समादिका ।  
 परिशोध्यदशामितौ ततः परिशेषस्यफलं विचिन्तयेत् ।  
 अथान्तर्दशादिज्ञानाय ध्रुवा नयनम् ।  
 दशामितिर्विंशतियुक्शतेनविभाजिता स्याद्ध्रुवकोन्तरादिके ।  
 अथवा केवलदशावर्षज्ञानादेव श्रीगुरुवरोक्तोध्रुवानयनप्रकारः  
 दशानयनप्रकारश्च ।  
 दशामानं त्रिगुणितं त्वन्तरेध्रुवकं स्फुटम् ।  
 दशघ्नं हिमरश्मेः स्यात्तदर्थं ध्रुवकेनयुक्  
 रवेर्मानं दशायाः स्याद्दूयोर्योगेगुरोर्भवेत्  
 गुरौतु ध्रुवयोगेन बुधराहार्किभार्गवाः  
 रवौतुध्रुवयोगेस्यात्कुजकेत्वोः फलं स्फुटम् ।  
 दशेशयोर्यत्खलुवर्षधातः खवेदभक्तोदिवसादिकाध्रुवा  
 प्रत्यन्तरेस्याद्धिततोवगम्यं पूर्वप्रकारेण दशाप्रमाणम्  
 महादशादेराधिपस्य वर्षप्रमाणधातोविहृतः खनागैः  
 घट्यादिकः स्याद्ध्रुवकः सुसूक्ष्मे प्राणेपलायः खनृपैर्वि  
 भक्तः । प्रसङ्गाद्ग्राहचालनविधिः ।



मिश्रेष्टयोर्यद्विवरं दिनाद्यं गतिसङ्गणम्  
 षष्ठ्याभक्तं लवाद्यं स्यान्मिश्राधिक्ये फलं त्वृणाम् ।  
 विपर्यये धनं कार्यं पक्तिखेटे स्फुटाग्रहाः  
 वक्रेतु विपरीतः स्याच्चालने विधिरेवहि ॥ ३ ॥

इस ग्रन्थ में नक्षत्र दशा के अनुसार मैं फल को कहूंगा दशा विंशोत्तरी ग्रहण करना अष्टोत्तरी सम्मत नहीं है । दशा बनाने की रीति । कृत्तिकादि नक्षत्र के क्रम से सूर्य चन्द्रमा मङ्गल राहु बृहस्पति शनि बुध केतु और शुक्र इन की दशा तीन आद्यत्ति से होती है । सूर्य का ६ चन्द्रमा का १० मङ्गल का ७ राहु का १८ बृहस्पति का १६ शनि का १९ बुध का १७ केतु का ७ और शुक्र का २० वर्ष दशा मान होता है । जन्म समय में वर्तमान नक्षत्र का भयात और भभोग बनाकर उनको सजाती करना इसके बाद भयात को दशा मान से गुण कर भभोग का भाग देने से वर्षादिक दशा का भुक्त हो जायगा इस को दशा मान में घटा देने से भोग्य दशा का मान होता है ।

दशा इत्यादि के मान में १२० का भाग देने से उसमें अन्तर की ध्रुवा होती है । अथवा महादशा के वर्ष को त्रिगुणित करने से अन्तर्दशा की । और दशा और अन्तर्दशा के स्वामियों के वर्ष के गुणन फल में ४० का भाग देने से प्रत्यन्तर्दशा की दिनादि ध्रुवा होती है ।

दशा अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों के वर्ष के घात में ८० का भाग देने से सूक्ष्म की घट्यादिक ध्रुवा होती है । और दशा अन्तर प्रत्यन्तर तथा सूक्ष्म दशा के स्वामियों के वर्ष के गुणन फल में १६० का भाग देने से पलात्मक



प्राण दशा की ध्रुवा होती है । ध्रुवा से अन्तर्दशादि बनाने की विधि—। ध्रुवा को १० से गुण देने से चन्द्रमा का और ६ से गुण देने से सूर्य का दशा मान होता है । दोनों को जोड़ देने से बृहस्पति का बृहस्पति के मान में ध्रुवा जोड़ने से बुध का बुध में ध्रुवा जोड़ने से राहु का राहु में जोड़ने से शनि का और शनि में जोड़ने से वा चन्द्रमा को दूना करने से शुक्र का दशा मान होता है । सूर्य के मान में ध्रुवा जोड़ने से मङ्गल और केतु का तुल्यही दशादि मान जानना ।

॥ सूर्य की दशा में अन्तर्दशा ॥

र	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	धु
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०
३	६	४	१०	६	११	१०	४	०	०
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	१८

॥ चन्द्रमा की दशा में अन्तर्दशा ॥

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	धु
०	०	१	१	१	१	०	१	०	०
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	१

॥ मङ्गल की दशा में अन्तर्दशा ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	धु
०	१	०	१	०	०	१	०	०	०
४	०	११	१	११	४	२	४	७	०
२७	१८	६	६	२७	२७	०	६	०	२१

॥ राहु की दशा में अन्तर्दशा ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	धु
२	२	२	२	१	३	०	१	१	०
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	१
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	२४



## ॥ बृहस्पति की अन्तर्दशा ॥

बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बु
२	२	२	०	२	०	१	०	२	०
१	६	३	११	८	६	४	११	४	१
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	१८

## ॥ शनि की अन्तर्दशा ॥

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बु	शु
३	२	१	३	०	१	१	२	२	०
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	१
३	९	६	०	१२	०	६	६	१२	२७

## ॥ बुध की अन्तर्दशा ॥

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बु	श	शु
२	०	२	०	१	०	२	२	२	०
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	१
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२१

## ॥ केतु की अन्तर्दशा ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	बु	श	बु	शु
०	१	०	०	०	१	०	१	०	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११	०
१७	०	६	०	२७	१८	६	६	२७	२१

## ॥ शुक्र की अन्तर्दशा ॥

शु	सू	चं	मं	रा	बु	श	बु	के	शु
३	१	१	१	३	२	३	२	१	०
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	२

## ॥ सूर्य की दशा और सूर्य ही की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा ॥

सू	चं	मं	रा	बु	श	बु	के	शु	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	६	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	०
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	५४



॥ सूर्य की दशा और चन्द्रमा की अन्तर्दशा ॥

चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	र	धु
०	०	०	०	०	०	०	१	०	०
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	६	१
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०

॥ रवि की दशा मङ्गल का अन्तर ॥

मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	धु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	१८	१६	१६	१७	७	२१	६	१०	१
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	३

॥ रवि का दशा राहु का अन्तर ॥

रा	बृ	श	बु	के	शु	र	चं	मं	धु
१	१	१	१	०	१	०	०	०	०
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	२
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	४२

॥ रवि की दशा गुरु का अन्तर ॥

बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	धु
१	१	१	०	१	०	०	०	१	०
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	२
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	२४

॥ रवि की दशा शनि का अन्तर ॥

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	धु
१	१	०	१	०	०	०	१	१	०
२४	१८	१२	२७	१७	२८	१६	२१	१५	२
६	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	५१

॥ रवि की दशा बुध का अन्तर ॥

बु	के	शु	र	चं	मं	रा	बृ	श	धु
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	२
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	३३



॥ रवि की दशा केतु का अन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	ध्रु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१६	१७	१
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	३

॥ रवि की दशा—शुक्र का अन्तर ॥

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	ध्रु
२	०	१	०	१	१	१	१	०	०
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	३

चन्द्रमा की दशा और चन्द्रमाहिकी अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	ध्रु
०	०	१	१	१	१	०	१	०	०
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	२
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०

॥ मङ्गल की अन्तर्दशा ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	ध्रु
०	१	०	१	०	०	१	०	०	०
१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	१
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	४५

॥ राहु की अन्तर्दशा ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ध्रु
२	२	२	२	१	३	०	१	१	०
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	४
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	३०

॥ बृहस्पति की अन्तर्दशा ॥

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ध्रु
२	२	२	०	२	०	१	०	२	२
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	४



॥ शनि का अन्तर ॥

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	धु
३	२	१	३	०	१	१	२	२	०
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	४
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	४५

॥ बुध का अन्तर ॥

बु	के	शु	र	चं	मं	रा	वृ	श	धु
२	०	२	०	१	०	२	२	२	०
१२	२६	२५	२५	१२	२६	१६	८	२०	४
१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	१५

॥ चन्द्रमा की दशा-केतु का अन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	धु
०	१	०	०	०	१	०	१	०	०
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२६	१
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	४५

॥ चन्द्रमा की दशा-शुक्र का अन्तर ॥

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	धु
३	१	१	१	३	२	३	२	१	०
१४	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	५

॥ चन्द्रमा की दशा-सूर्य का अन्तर ॥

सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	धु
०	०	०	०	०	०	०	०	१	०
६	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	१
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	३०

॥ मङ्गल की दशा मङ्गलही की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	धु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२२	१६	२३	२०	८	२४	७	१२	१
३४	३	३६	१६	४६	३४	३०	२१	१५	१३
३०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०	३०



## ॥ मङ्गल की दशा-राहु की अन्तर्दशा ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	धु
१	१	१	१	०	२	०	१	०	०
२४	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	३
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	६

## ॥ मङ्गल की दशा गुरु की अन्तर्दशा ॥

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	धु
१	१	१	०	१	०	०	०	१	०
१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	१६	२०	२
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८

## ॥ मङ्गल की दशा-शनि का अन्तर ॥

श	बु	के	शु	स	चं	मं	रा	वृ	धु
२	१	०	२	०	१	०	१	१	०
३	२६	२३	६	१६	३	२३	२६	२३	३
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१६
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

## ॥ मङ्गल की दशा-बुध का अन्तर ॥

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	धु
१	०	१	०	०	०	१	१	१	०
२०	२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६	२
३४	४६	३०	५१	४५	४६	३३	३६	३१	५८
३०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०

## ॥ मङ्गल की दशा-केतु का अन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	धु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२४	७	१२	८	२२	१६	२३	२०	१
३४	३०	२१	१५	३४	३	६६	१६	४६	१३
३०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०

## ॥ मङ्गल की दशा-शुक्र का अन्तर ॥

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	धु
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०
१०	२१	५	२४	२३	२६	६	२६	२४	३
०	०	०	३०	०	३०	३०	३०	३०	३०



॥ मङ्गल की दशा सूर्य का अन्तर ॥

सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	ध्रु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२१	१
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	३

॥ मङ्गल की दशा चन्द्रमा का अन्तर ॥

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	ध्रु
०	०	१	०	०	०	०	१	०	०
१७	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	१
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५

॥ राहु की महादशा और राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ध्रु
४	४	५	४	१	५	१	२	१	०
२५	६	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	८
४८	३६	५४	४२	४१	०	३६	०	४२	६

॥ राहु की दशा—वृहस्पति का अन्तर ॥

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ध्रु
३	४	४	१	४	१	२	१	४	०
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	६	७
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	१२

॥ रा. द. शनि का अन्तर ॥

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	ध्रु
५	४	१	५	१	२	१	५	४	०
१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	३	१६	१८
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	३३

॥ रा. द. बुध का अन्तर ॥

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	ध्रु
४	१	५	१	२	१	४	४	४	०
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	७
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	३६



## ॥ रा. द. केतु का अन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	ध्रु
०	२	०	१	०	१	१	१	१	०
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२६	२३	३
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	६

## ॥ राहु दशा—शुक्र की अन्तर ॥

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	ध्रु
६	१	३	२	५	४	५	५	२	४
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	६

## ॥ राहु दशा—रवि का अन्तर्दशा ॥

सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	ध्रु
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	२
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	४२

## ॥ राहु की दशा—चन्द्रमा का अन्तर ॥

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	ध्रु
१	१	२	२	२	२	१	३	०	०
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	४
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	३०

## ॥ राहु की दशा—मङ्गल की अन्तर्दशा ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	ध्रु
०	१	१	१	१	०	२	०	१	०
२२	२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	३
३	४२	२४	५१	३३	३	३०	५४	३०	६

## ॥ वृहस्पति की दशा—वृहस्पति का अन्तर ॥

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ध्रु
३	४	३	१	४	१	२	१	३	०
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	६
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	२४



॥ वृ. द. शनि का अन्तर ॥

श	वृ	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	ध्रु
४	४	१	५	१	२	१	४	४	०
२४	६	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	७
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	३६

॥ गु. द. बुध का अन्तर ॥

वृ	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	ध्रु
३	१	४	१	२	१	४	३	४	०
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	६	६
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	४८

॥ गु. द. केतु का अन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	वृ	ध्रु
०	१	०	०	०	१	१	१	१	०
१६	२६	१६	२८	१६	२०	१४	२३	१७	२
३६	०	४८	०	३६	२४	४	१२	३६	४८

॥ गु. द. शुक्र का अन्तर ॥

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	वृ	के	ध्रु
५	१	२	१	४	४	५	४	१	०
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	८

॥ गु. द. सूर्य का अन्तर ॥

सू	चं	मं	रा	वृ	श	वृ	के	शु	ध्रु
०	०	०	१	१	१	१	०	१	०
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	२
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	२४

॥ गु. द. चन्द्रमा का अन्तर ॥

चं	मं	रा	वृ	श	वृ	के	शु	आ	ध्रु
१	०	२	२	२	२	०	०	०	०
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	४



## ॥ गु. द. मङ्गल का अन्तर ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	ध्र
०	१	१	१	१	०	१	०	०	०
१६	२०	१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	२
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	४८

## ॥ गु. द. राहु की अन्तर्दशा ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ध्र
४	३	४	४	१	४	१	२	१	०
६	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	७
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	१२

## ॥ शनि की दशा और शनि कीही अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर ॥

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	ध्रु
५	५	२	६	१	३	२	५	४	०
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	६
२८	२५	१०	३०	६	१५	१०	२७	२४	१
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

## ॥ श. द. बुध का अन्तर ॥

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	ध्रु
४	१	५	१	२	१	४	४	५	०
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	६	३	८
१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५	४
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

## ॥ श. द. केतु का अन्तर ॥

के	शु	स	चं	मं	रा	वृ	श	बु	ध्रु
०	२	०	१	०	१	१	२	१	०
२३	६	१६	३	२३	२६	२३	३	२६	८
१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	४
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

## ॥ श. द. शुक्र का अन्तर ॥

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	ध्रु
६	१	३	२	५	५	६	५	२	०
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	६
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०



॥ श. द. सूर्य का अन्तर ॥

सू	च	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	धु
०	०	०	१	१	१	१	०	१	२
१७	२८	१६	२१	१५	२४	१८	१६	२७	५१
६	३०	५७	१८	३६	६	२७	५७	०	०

॥ श. द. चन्द्रमा का अन्तर ॥

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	धु
१	१	२	२	३	२	१	३	०	०
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	४
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	४५

॥ श. द. मङ्गल का अन्तर ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	धु
०	१	१	२	१	०	२	०	१	०
२३	२६	२३	३	२६	२३	६	१६	३	३
१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

॥ श. द. राहु का अन्तर ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	धु
५	४	५	४	१	५	१	२	१	०
३	१६	१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	८
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	३३

॥ श. द. गुरु का अन्तर ॥

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	धु
४	४	४	१	५	१	२	१	४	०
१	२४	६	२३	२	१५	१६	२३	१६	७
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

॥ बुध की दशा और बुधही की अन्तर्दशामें प्रत्यन्तर ॥

बु	के	शु	स	चं	मं	रा	वृ	श	धु
४	१	४	१	२	१	४	३	४	०
२०	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	७
४६	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	१३
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०



## ॥ बुध की दशा केतु का अन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	ध
०	१	०	०	०	१	१	१	१	०
२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६	२०	२
४६	३०	५१	४५	४६	३३	३६	३१	३४	५८
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

## ॥ बुध द. शुक्र का अन्तर ॥

शु	स	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	ध
५	१	२	१	५	४	५	४	१	०
२०	२१	२५	२६	३	१६	११	२४	२६	८
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०

## ॥ बुध द. सूर्य का अन्तर ॥

सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु
०	०	०	१	१	१	१	०	१
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

## ॥ बुध की दशा चन्द्रमा का अन्तर ॥

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	स	ध
१	०	२	२	२	२	०	२	०	०
१२	२६	१६	८	२०	१२	२६	२५	२५	४
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	१५

## ॥ बुध की दशा मंगल का अन्तर ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	स	चं	धु
०	१	१	१	१	०	१	०	०	०
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२६	१७	२६	२
४६	३३	३६	३१	३४	४६	३०	५१	४५	५८
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

## ॥ बुध की दशा राहु का अन्तर ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	धु
४	४	४	४	१	५	१	२	१	०
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	७
४२	२४	२१	३	३६	०	५४	३०	३३	३६



## ॥ बुध की दशा गुरु का अन्तर ॥

बु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ध्रु
३	४	३	१	४	१	२	१	४	०
१८	६	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	६
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८

## ॥ बुध की दशा शनि का अन्तर ॥

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	ध्र
५	४	१	५	१	२	१	४	४	०
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	६	८
२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१६	४
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

## ॥ केतु की दशा केतु के ही अन्तर में प्रत्यन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	ध्र
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२४	७	१२	८	२२	१६	२३	२०	२
३४	३०	२१	१५	३	३	३६	१६	४६	५८
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

## ॥ शुक्र का अन्तर ॥

शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	ध्र
२	०	१	०	२	०	२	१	०	०
१०	२१	५	२४	३	१	६	२६	२४	३
०	०	०	३०	०	२६	३०	३०	३०	३०

## ॥ सूर्य का अन्तर ॥

सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	ध्र
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२१	१
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	३

## ॥ चन्द्रमा का अन्तर ॥

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	स
०	०	१	०	१	०	०	१	०
१७	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०
३०	१५	३०	०	२५	४५	१५	०	३०



## ॥ मङ्गल का अन्तर ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं
०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२२	१६	१३	२०	८	२४	७	१२
३४	३	३६	१६	४६	३४	३०	२१	१५
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

## ॥ राहु का अन्तर ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	स	चं	मं
१	१	१	१	०	२	०	१	०
२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२
२४	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	०

## ॥ केतु की दशा गुरु का अन्तर ॥

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
१	१	१	०	१	०	०	०	१
१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	१६	२०
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

## ॥ शनि का अन्तर ॥

श	बु	के	शु	स	चं	मं	रा	वृ	ध्रु
२	१	०	२	०	१	०	१	१	०
३	२६	२३	६	१६	३	२३	२६	२३	३
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१६
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

## ॥ बुध का अन्तर ॥

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	शु
१	०	१	०	०	०	१	१	१
२०	२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६
३४	४६	३०	५१	४५	४६	३३	३६	३१
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

## ॥ शुक्र की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर ॥

शु	स	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के
६	२	३	२	६	५	६	५	२
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०



॥ रवि का अन्तर ॥

सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु
०	१	०	१	१	१	१	०	२
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

॥ चन्द्रमा का अन्तर ॥

चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू
१	१	३	२	३	२	१	३	१
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०

॥ मङ्गल का अन्तर ॥

मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं
०	२	१	२	१	०	२	०	१
२४	३	२६	६	२६	२४	४०	२१	५
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

॥ राहु का अन्तर ॥

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
५	४	५	५	२	६	१	३	२
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३

॥ बृहस्पति का अन्तर ॥

वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
४	५	४	१	५	१	२	१	४
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४

॥ शनि का अन्तर ॥

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ
६	५	२	६	१	३	२	५	५
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०



## ॥ बुध का अन्तर ॥

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श
४	१	५	१	२	१	५	४	४
२४	२६	२०	२१	२५	२६	३	१६	११
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

## ॥ केतु का अन्तर ॥

के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु
०	२	०	१	०	२	१	२	१
२४	१०	२१	५	२४	३	२५	६	२६
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

पूर्वोक्त रीति से सूक्ष्मादिक भी बहुत सुगम से बन जाते हैं।

बुधैर्भावादयः सर्वे ज्ञेयाः सामान्यशास्त्रतः ।

एतच्छास्त्रानुसारेण संज्ञां ब्रूमो विशेषतः ॥४॥

बुधैर्विद्वद्भिः भावादयः सर्वे पदार्थाः सामान्य  
शास्त्रतः प्रचलितान्यग्रन्थेभ्योज्ञेयाः ज्ञातव्याः । एतच्छा-  
स्त्रानुसारेण विशेषतः शुभाशुभसंज्ञां वा विशेष पदाद्व-  
क्ष्यमाणात्संज्ञां ब्रूम इति । अथ प्रसङ्गाद्भावादि संज्ञा ।

तनु १ धन २ सहज ३ मुहत् ४ सुत ५ रिपु ६  
जाया ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्मा १० याः ११  
व्यय १२ इति लग्नादीनां संज्ञाः प्रोक्ताः पुराविद्भिः ।  
कालात्मा दिनकृन्मनस्तु हिनगुः सत्त्वं कुजो शोवचो  
जीवो ज्ञानमुखे सितश्चमदनो दुःखं दिनेशात्मजः  
राजानौरविशीतगू क्षितिसुतो नेता कुमारोबुधः



सूरिर्दानवपूजितश्च सचिवौ प्रेक्ष्यः सहस्रांशुजः ।  
 अनेन क्रमेणराशीशव्यवस्था । राजानोहि स्वतन्त्रधियो-  
 भवन्ति तेन स्वस्वस्वभावानुरूपौ राशी कर्कट सिंहौ  
 चन्द्रादित्यावङ्गीकृतौ । ततस्ताभ्यां यथाधिकारवशाद्गृहेभ्यो  
 राशयोदत्ताः ।

राजकुमाराय बुधाय चन्द्रमा मिथुनं रविः कन्यां  
 च दत्तवान् । एवं बुधोद्विराशिपः । ततोमन्त्री शुक्रः वृष  
 तुलाधीशः । ततः सेना पतिर्भौमः मेषवृश्चिकयोः स्वा-  
 मी । ततोगुरुर्धनुर्मीनयोरधिपतिः ततोभृत्यः शनिः मकर-  
 कुम्भेशः । यथोक्तंहोरामकरन्दे ।  
 कण्ठीरवं विक्रमिणं विलोक्य स्वीयं पदं तत्र च कार सूर्यः ।  
 मैत्र्या तदा सन्नतया कुलीरेनिजं बन्ध्यालयमेणलक्ष्मा ॥  
 अन्येग्रहागृहयियाचिषया क्रमेण  
 शीतांशुतिग्ममहसोः सधनं समीयुः ।  
 प्राप्तक्रमेणददतुर्भवनानि तौतु  
 ताराग्रहाद्विभवनास्तत एवजाताः ।  
 क्षितिजासितज्ञचन्द्ररविसौम्यसितावनिजाः  
 सुरगुरुमन्दसौरिगुरवश्चगृहांशकपाः  
 अजमृगतौलिचन्द्रभवनादिनवांशविधि  
 भवनसमांशकाधिपतयः स्वगृहात्क्रमशः ।



कुजरविजंगुरुज्ञशुक्रभागाः पवनसमीरणकौर्षिजूकलेयाः  
अयुजि युजितुमे विपर्ययस्थाः शशिभवनालिङ्गषान्तमृ-  
क्षसन्धिः ।

क्रूरः सौम्यः पुरुषवनिते ते चरागद्विदेहाः

प्रागादीशाः क्रिय वृषनृयुक्कर्कटाः सत्रिकोणाः

मार्तण्डेन्द्रोरयुजिसमभेचन्द्रभान्वोश्चहोरे

द्रेष्काणाः स्युः स्वभवनसुतत्रिकोणाधिपानाम् ।

क्षेत्रंहोरादृक्सप्तार्यसूर्यत्रिंशद्भागाः सप्तवर्गानिरुक्ताः

ओजितस्माद्युग्मभे सप्तमाच्च राशीशा ये सप्तवर्गाधिनाथा

वास्तव दशवर्गाः ॥ ४ ॥

क्षेत्रंहोरात्र्यागनन्दाख्य भागा दिग्भूपालत्रि शदंशाभिधानाः

ज्ञेयामेषादर्कषष्ठ्यंशभागौ राशेर्ज्ञेयौ जातकज्ञैः फलार्थम् ॥

पण्डित लोग भावादि पदार्थों को अन्य ग्रन्थों से जाने इस ग्रन्थ में विशेष करके भावादिक की शुभाशुभ संज्ञाही को मैं कहूंगा । सिंहादि ६ राशियों के क्रम से स्वामी सूर्य और कर्कादि ६ राशियों के व्युत्क्रम से स्वामी चन्द्रमा होते हैं । इन में उग्र प्रकृति और शीत प्रकृति के सिंह और कर्कट राशियों को सूर्य और चन्द्रमा ने अपना अपना स्थान बनाया इसके बाद जैसे जैसे अधिकारी ग्रहों ने स्थान की याचना की वैसे वैसे दोनों ने उन ग्रहों को अपने अपने अधिकार के एक एक राशि दिये इसलिये शेष सभी ग्रह दो दो राशियों के स्वामी बने फल कथनमें दशवर्गकी आवश्यकता पड़ती है राशि होरा द्रेष्काण सप्तमांश



नवमांश दशमांश द्वादशांश षोडशांश त्रिंशांश और षष्ठ्यंश ए  
दशवर्ग कहलाते हैं इनमें द्वादशांश और षष्ठ्यंश जिस राशि में  
देखना हो उसी राशि से होते हैं बाकी आठ मेपादिक ही  
सर्वदा होते हैं । इनका पूरा विवरण फलित विकाशमें है ॥ ४ ॥

पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजाः पुनः ।

विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् ॥ ५ ॥

पश्यन्तीति । स्वाधीष्ठितस्थानात्सप्तमं स्थानं सर्वे  
ग्रहाः पश्यन्ति पुनः शनिजीवकुजाः क्रमेण विशेषतः  
त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् पश्यन्ति । त्रिदशं तृतीयं-  
दशमं च शनिः पूर्णदशावलोकयति । त्रिकोणं नवमं-  
पञ्चमं च गुरुः पूर्णदशावलोकयति । चतुर्थमष्टमञ्च  
भौमः पूर्णदशावलोकयति । ननु दृष्टिविषयको विशेषा  
ग्रन्थान्तरतः सिद्धएवात्र स्थलेखनं किमर्थं तत्रोच्यते  
ग्रन्थान्तरेषु त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमानित्यादिना ग्र-  
हाणां पाददृष्टिरभिहिता अत्र तु पूर्णदृष्टिरेवाचार्यस्या-  
भिमतता तेनात्र ग्रथनं समीचीनमिति । एवमेतेषां पूर्णदृष्टौ  
विशेषत्वे कारणं पूर्वं कल्पितम् यथास्वस्वस्थानात् सप्तमं  
कलत्रस्थानं जाया रक्षणं सर्वेषामावश्यकम् उक्तमपि  
“स्वांप्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च ।”  
स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन् हि रक्षति । तेन सर्वे ग्रहाः



सप्तमं पूर्णं पश्यन्ति प्रतिक्षणं तत्स्थानं मनसिस्मरन्तीति-  
 भाव एवमेव तृतीयं पराक्रमस्थानं दशमं राज्यस्थानं शनिः  
 भृत्यः राज्ञो राज्यरक्षा बलरक्षा च भृत्यस्य मुख्यं कर्म  
 अतः शनिस्तृतीयं दशमं सप्तमं च पूर्णदृशावलोक-  
 यति । चतुर्थं सुखस्थानम् अष्टममरिष्टस्थानम् । दुर्ग  
 स्थानं च । भौमस्तु सेनानायकः । राज्ञः सुखरक्षणं दुर्ग  
 रक्षणं च सेनाधीशस्यावश्यकन्तेन चतुरष्टमं भौमः पूर्ण  
 दृशा पश्यति । तथा पञ्चमं विद्यास्थानम् । नवमं धर्म  
 स्थानम् । विद्या शिक्षणं धर्मशिक्षणं च गुरोः मुख्यं कर्म  
 तेन बृहस्पतिः नवमं पञ्चमं च पूर्णदृशावलोकयतीति ॥ ५ ॥

सप्तम स्थान को सभी ग्रह पूर्ण देखते हैं तृतीय दशम को  
 शनि । चतुर्थ अष्टम को मङ्गल और पञ्चम तथा नवम को बृहस्पति  
 पूर्ण दृष्टि से देखते हैं । अर्थात् तृतीय दशम और सप्तम को शनि  
 चतुर्थ अष्टम और सप्तम को मङ्गल । नवम पञ्चम और सप्तम को  
 बृहस्पति शेष ग्रह सप्तम ही को देखते हैं । इस ग्रन्थ में पूर्ण दृष्टि  
 ही सम्बन्ध में प्रधान है पाद दृष्टि नहीं ॥ ५ ॥

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः ।

पतयस्त्रिषडायानां यदिपापफलप्रदाः ॥ ६ ॥

सर्वेति—त्रिकोणनेतारः पञ्चमनवमेशाः सर्वेग्रहाः  
 शुभाः पापाश्च शुभफलप्रदाः यदि त्रिषडायानां पतय-  
 स्तर्हि पापफलप्रदाः । परमस्मिन्नर्थे महान्दोषः । रवि



चन्द्रौ विहाय सर्वेग्रहा राशिद्वयाधिपाः । तत्रैकोराशि  
विषमः द्वितीयः समः । तेन ये ग्रहाः विषमभावाधि-  
पास्ते पुनर्विषमभावपतयो न भवितु मर्हन्ति किन्तु  
ते समभावाधिपा एव तेन त्रिकोणेशौ तृतीयलाभाधिपौ  
न भवितुमर्हतः केवलं षष्ठशौ भवितुमर्हतः तेन त्रिकोण  
नेतारो यदि षष्ठपतयः तदा न शुभाः इत्येववक्तुंयोग्यम्  
अथ वास्तविकोर्थः । यदि त्रिकोण नेतारः त्रिकोणस्वामिनः  
सर्वेग्रहाः ग्रन्थान्तरोक्ताः शुभा वा पापाः शुभफलदाःतदा  
त्रिषडायानां तृतीय षष्ठैकादशानां पतयस्तु पापफलप्रदाः—  
अर्थादत्र त्रिकोणेशाः शुभाः त्रिषडायेशाः पापाः त्रिकोणं  
शुभस्थानं त्रिषडायाः न शुभा इत्यत्र विशेषः । अत्र लग्न-  
मपि त्रिकोणत्वेनयथावसरं वक्ष्यमाणविचारार्हम् ॥६॥

अब भावों की संज्ञा कहते हैं त्रिकोण ५-९ भावों के स्वामी  
शुभ फल दायक और त्रिषडाय ३, ६, ११ भावों के स्वामी  
पाप फलदायक होते हैं । अर्थात् त्रिकोण स्थान शुभ और  
त्रिषडाय स्थान पाप फलद हैं जो दोनों के स्वामी होते हैं वे  
स्वभावतः पाप फलदही होते हैं ॥ ६ ॥

न दिशन्ति शुभं नृणां

सौम्याः केन्द्राधिपा यदि ॥

क्रूराश्चेदशुभं ह्येते

प्रबलाश्चेत्तरोत्तरम् ॥७॥



अथकेन्द्रगुणान् वर्णयति नदिशन्तीति । सौम्याः  
 शास्त्रान्तरप्रसिद्धाः शुभग्रहा यदि केन्द्राधिपा लग्न  
 चतुर्थ दशम सप्तम स्थानपास्तदानृणां शुभ फलं  
 नदिशन्ति । यदि च पापाः केन्द्राधिपास्तदा अशुभं  
 नदिशन्ति । एते शुभाः पापाश्चोत्तरोत्तरं यथास्यात्तथा  
 प्रवलाः । परमियमुक्तिः शास्त्रान्तरात्सर्वथा विरुद्धा  
 यतः केन्द्रे लग्नचतुर्थसप्तमदशमानि चत्वारि स्थानानि  
 तत्र लग्नाच्छरीराविचारः चतुर्थान्मातृसुखगृहबन्धवा-  
 दीनां विचारः सप्तमात्कलत्र विचारः दशमाद्भाग्य  
 पितृ व्यवसायादि विचारः । सर्वेषां भावानां शुभ स्था-  
 मित्वेन शुभयोगाच्छुभदृष्ट्याच शुभत्वं पापरवामित्वेन  
 पापयोगात् पापदृष्ट्याचाशुभत्वं ग्रन्थान्तरेषु सर्वत्र  
 प्रतिपादितम् । अत्रार्थे शुभस्वामित्वेनाशुभत्वम् पाप  
 स्वामित्वेन च शुभफलदत्वं तेनायमर्थो न समीचीनः  
 अथप्रकारान्तरेणैतद्व्याख्यायते । केन्द्रेयानिचत्वारिस्था-  
 नानि तानि शरीरगृहस्त्रीराज्यमूलानि तेषां शुभ  
 स्वामित्वेन शरीरादीनामपि शोभनत्वम् । शरीरादीनां  
 शोभनत्वे न पारलौकिकीचिन्तां मनुष्यः करोति । पाप  
 स्वामित्वेन शरीरादीनां क्लेशबाहुल्ये सर्वे आस्तिका  
 नास्तिका अपि सुमनसा हरिस्मरन्ति अत आचार्येणैव



मुक्तं यदि सौम्याः केन्द्राधिपास्तदा शरीरादिपदार्थानां  
 शोभनत्वेन कारणेन शुभमर्थात्पारलौकिकं शुभं न दि-  
 शन्ति । यदिच पापाः केन्द्राधिपास्तदा शरीरादिनामशु-  
 भत्वेनाशुभमर्थात्पारलौकिकमशुभफलं न दिशन्तीति  
 परमयमर्थो वेदान्तिनां सम्मतः न ह्यौरीकाणाम् । अथ  
 च वक्ष्यमाण ग्रन्थविचारतो वास्तविकोर्थः सौम्याः केन्द्रो-  
 धिपाः शुभाः पापाः केन्द्राधिपाः पापफलदाः । तत्र यदि  
 सौम्याः केन्द्राधिपाः त्रिषडायाधिपातित्वेनेहेतुना नृणां  
 शुभं न दिशन्ति तत्र क्रूराः केन्द्राधिपाः त्रिकोणेशत्वेन  
 कारणेन शुभं दिशन्ति चेद्यदि सौम्या केन्द्राधिपाः त्रिको-  
 णाधीशत्वेन शुभफलदास्तत्र क्रूराः त्रिषडायाधीशत्वेना  
 शुभफलदा एव । यथा कर्कट लग्ने सिंहलग्ने च चतु-  
 र्थदशमाधीशः शुक्रः क्रमेण लाभतृतीयाधीशत्वेन पाप-  
 फलदः तत्र दशम चतुर्थीधीशो भौमः पञ्चमनवमा  
 धीशत्वेन शुभफलदः । मकरकुम्भयोश्च दशमपञ्चम  
 चतुर्थनवमाधीशः शुक्रः शुभफलदः । तत्र चतुर्थ दश-  
 माधीशो भौमः लाभतृतीयाधीशत्वेन च पापफलद-  
 एवेति । परमस्यार्थस्य “ कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रत्युक्ते  
 त्यादिकारिकाऽज्ञानान्नप्रतीतिः । तथैतेन भावस्य शुभा-  
 शुभसंज्ञापि न जाता अतस्तावदस्यार्थः एवं शोभनः



यदि सौम्याः केन्द्राधिपाः शुभं नदिशन्ति तदाऽशुभमपि नदिशन्ति—यदाच पापाः केन्द्राधिपा अशुभं नदिशन्ति तदा शुभमपि नदिशन्तीति । अनेन शुभस्वामित्वेन केन्द्रस्थानानां शुभत्वं पाप स्वामित्वेन चाशुभत्वं स्फुट-मागतम् । अथैते उत्तरात्तरक्रमेणप्रबलाः लग्नाच्चतुर्थः चतुर्थात्सप्तमः सप्तमादशमः प्रबल इति ॥ ७ ॥

शुभग्रह केन्द्राधिपति शुभ तथा पापग्रह केन्द्राधिपति पाप फल देते हैं । परन्तु पांच ग्रह दोदो राशियों के स्वामी होते हैं इसकारण केन्द्रेण भी अन्य स्थानों के स्वामी होंगे इस अवस्था में यदि शुभग्रह केन्द्राधिपति होकर त्रिषडायाधिपति होने से शुभ कारक नहीं होता तो पापग्रह केन्द्राधिपति त्रिकोणाधिपति हो कर शुभ फल देता है तथा जब शुभग्रह केन्द्राधिपति त्रिकोणाधिपति होने से शुभ कारक हो जाता है उस अवस्थामें पापग्रह केन्द्राधिपति त्रिषडायाधिपति होकर पाप फल देता है बुध बृहस्पति और चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने से सर्वदा शुभद तथा सूर्य केन्द्राधिपति होने से सर्वदा पाप फलद होता है । ये ग्रह उत्तरोत्तर प्रबल होते हैं लग्नेश से चतुर्थेश चतुर्थेश से सप्तमेश और सप्तमेश से दशमेश प्रबल होता है ॥ ७ ॥

लग्नाद्व्ययद्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः ॥

स्थानान्तरानुगुण्येन भवतः फलदायकौ ॥ ८ ॥

लग्नाज्जन्मलग्नाद्व्ययद्वितीयाधीशौ ग्रहौ अन्येषां ग्रहाणां सम्बन्धवशात् तथा द्वितीयद्वादशातिरिक्तं यद



न्यत्स्थानं तत्स्थानान्तरम् गुणमेवगुण्यम् । स्थानान्तरानुरूपं यद्गुणं तत्स्थानान्तरानुगुण्यं तेन च फलदायकौ भवतः । परमनेन द्वितीयद्वादशाधीशयोरेव सम्बन्धवशात्फलप्रदत्वं नान्येषां तथा केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परमित्यादिना सर्वेषां सम्बन्धवशात्फलप्रदत्वं वक्षमाणम् तेनात्र महान्विरोधः । तथा द्वितीयद्वादशयोरेव ग्रहणेकिंतात्पर्यम् । तेन प्रकारान्तरेणायं व्याख्यायते । ग्रहाः फलदायका भवन्ति कस्मात् परेषां साहचर्यतः तथा स्थानान्तरानुगुण्येन यथा लग्नादव्ययद्वितीयेशौ फलदायकौ भवतः । अत्र द्वितीयद्वादशग्रहणं भावनामनिर्देशार्थम् । तथा विशेषगुणबोधार्थञ्च । अर्थाद्यद्यपि सर्वेग्रहा सम्बन्धवशात्फलानिदद्युः तथापि द्वितीयद्वादशाधीशौ विशेषतः सम्बन्धवशात्फलदायकौ— व्ययद्वितीयेशावितिब्रह्माचार्येणग्रन्थान्तरोक्तोत्क्रमक्रमगणनापि सूचिता । तथा स्थानद्वयाधिपतीनां स्थानविशेषतः फलनिश्चयत्वमपि प्रतिपादितम् । यथा समराशिस्था विषमस्थानानुरूपं विषमराशिस्थाः समराश्यनुरूपं फलं प्रयच्छन्तीति । अथ च फलकथने विशेषतः स्थानान्तरानुगुण्यं पूज्यैः कल्पितं तेषां नामानि लक्षणानि च । स्थानान्तरानुगुण्यं षड्विधम् । गुणानुगुणसहायकपोषकयुक्तिप्रकारका इति तेषांना-



मानि । विचाराश्रयी ग्रहो यस्मिन्भावे वर्तते तस्य गुण इति नाम । तत्सम्बन्धिग्रहो यस्मिन्भावे तिष्ठेत् स चानुगुणः । विचाराश्रयीभूतो ग्रहो यद्भावाधिपतिः स सहायकः तत्सम्बन्धिस्तु यद्राश्यधिपः स पोषकः विचाराश्रयीभूतग्रहराशीशोयस्मिन् राशौ भवेत्सयुक्तिः तत्सम्बन्धि ग्रहाधीशो यद्राशौ तिष्ठेत् स प्रकार इति । वराहमिहिरेणाप्येवमेवोक्तम् ।

संज्ञाध्याये यस्ययद्रव्यमुक्तं कर्माजीवे यश्च यस्योपदिष्टः । भावस्थानालोकयोगोद्भवश्च तत्तत्सर्वतस्ययोज्यं दाशायाम् इति । सम्बन्धन्त्वग्रे वक्ष्यति ॥ ८ ॥

लग्न से द्वादशेश और द्वितीयेश अपने अन्यस्थानानुरूप और जैसे ग्रह के साथ सम्बन्ध होता हो तदनुरूप फल देते हैं ॥८॥

भाग्यव्ययाधिपत्येन रन्ध्रेशो न शुभप्रदः ॥  
स एवशुभ संधाता लग्नाधीशोपिचेत्स्वयम् ॥९॥

भाग्यव्ययेति—रन्ध्रेशोऽष्टमभवनाधीशोग्रहः

भाग्यव्ययाधिपत्येन कारणेन नशुभप्रदः । भाग्यञ्च व्ययञ्चेति भाग्यव्ययं तयोराधिपत्येन स्वामित्वेनेति—परं व्ययाधिपत्यं रन्ध्रेशस्यकथं चिदपि न स्यादित्यनेनायमर्थो समीचीनः । भाग्यस्यव्ययम् भाग्यव्ययं तदाधिपत्वेनेति विग्रहे शुभभावाधिपा अपि पापफलप्रदाः स्युः यथा भाग्येशो नशुभः कर्मव्ययाधिपत्येन लग्नेशो नशुभः धन-



व्ययाधिपत्येन इत्यादि तेनायमर्थो नसाधुः । तेन रन्ध्रे-  
शश्छिद्राधिपोग्रहः भाग्यव्ययाधिपत्येन भाग्यनाश कर्तृ-  
त्वेन हेतुना यथा रन्ध्रेशश्छिद्रान्वेषी दुर्जनः भाग्य  
व्ययाधिपत्येन परस्यनिष्प्रयोजनं सुकार्यनाशकर्तृत्वेन  
हेतुना न शुभस्तथैव न शुभप्रदः । अथ च स एव  
रन्ध्रेशः शुभसन्धाता शुभकर्ता स्यात् यदास्वयं लग्ना-  
धीशोपि चेत्तदा । अत्र लग्नाधीशशब्देनैव कार्यनिर्वाहे  
अपिचेत्स्वयमित्यनेन कश्चिद्विशेषार्थः संभाव्यते । अत्र  
लग्नं त्रिकोणे केन्द्रेचपरिगणितं त्रिकोणस्य शुभत्वं स्पष्टं  
प्रति पादितमेव तेन लग्नाधीशोपि चेदित्यनेन यदि  
रन्ध्राधीशस्त्रिकोणाधीशोभवेत्तदा शुभकर्ता अन्यथा  
स्वयमित्युक्ता अष्टमस्थाने भवेत्तदा शुभकर्ता स्यादिति ।  
छिद्रान्वेषी जनवर्णनम् ।

बहुनिष्कपटद्रोही बहुधान्योपघातकः ।

रन्ध्रान्वेषी च सर्वत्र दूषको मूषको यथा ॥

अन्यच्च

प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठमासं

कर्णेकलं किमपि रौति शनैर्विचित्रम् ।

छिद्रं निरूप्यसहसा प्रविशत्यशंकं

सर्वं खलस्यचरितं मशकःकरोति, ॥ इति

भाव गुणवर्णनम् ९



अष्टमेश भाग्य का नाश कारक होने से शुभ फल कर्ता नहीं होता पर यदि त्रिकोणाधिपति हो कर अष्टमही में स्थित होतो शुभ कारक होता है ॥ ९ ॥

अथ भावगुण कथनानन्तरं ग्रहगुणान्वर्णयति ।

केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान्गुरुशुक्रयोः

मारकत्वेपि च तयोर्मारकस्थानसंस्थितिः १०

बुधस्तदनु चन्द्रोपि भवेत्तदनु तद्विधः

न रन्ध्रेशत्वदोषस्तु सूर्याचन्द्रमसोर्भवेत् ॥ ११ ॥

गुरुशुक्रयोः देवदैत्येज्ययोः केन्द्राधिपत्यदोषो बलवान् तथा तयोर्मारकस्थानसंस्थितिर्मारकत्वे विषये बलवती । अर्थादस्मिन्ग्रन्थे त्रिकोणाधीशस्यैव शुभत्वं प्रतिपादितम् । केन्द्राधीशस्यगुरोःत्रिकोणेशत्वस्या संभवात् शुक्रस्यतु शुभस्थानाधिपतित्वापेक्षयाऽशुभस्थानाधिपति त्वस्यैव प्रायः संभवात् तयोः केन्द्राधिपत्यप्रयुक्तयो दोषः सबलवान् परन्त्वत्र ग्रन्थेषु गुरुशुक्रयोः पूर्वं केन्द्रस्थानाधिपत्वेन दोषकथनाभावादत्र केन्द्राधिपतित्व दोषवर्णयति तयोः गुरुशुक्रयोः मारके मारकस्थाने वक्षमाणप्रकारेण सप्तमे स्थानसंस्थितिः स्थानस्यराशेः संस्थितिश्चेत्तदायमेव केन्द्राधिपत्यदोषो मारकत्वेपि च बलवान् भवेत् एतदुक्तं भवति यदि गुरुशुक्रौ मारकाधीशौ स्यातां तदा प्रबलमारकावपिभवेतामिति । यदि गुरुःसप्तमेशश्चेत्तदा चतुर्थ



दशमान्यतर स्थानाधिपतित्वेन त्रिकोणाधिपतित्वाभावात्  
स्थानान्तरानुगुण्येन शुभत्वासंभवः । शुक्रोयदा सप्तमेश-  
श्चेत्तदा द्वादशद्वितीयान्यतरस्थानपतित्वेन मारकफलस्यैव  
प्रावल्यम् । तेनतयोः विशेषेण शुभदत्वात् मारकत्वेपि  
प्रावल्यं स्यादेवेति । गुरुशुक्रापेक्षया बुधस्याल्पशुभदत्वात्-  
तोपि चन्द्रस्याल्पशुभदत्वात्क्रमशः बुधचन्द्रयोरल्पमल्पं  
मारकेशत्वमिति । अथ च सूर्याचन्द्रमसो रविचन्द्रयो-  
रन्ध्रेशत्व दोषो न भवेत् परन्तु रविचन्द्रयोर्दशायां  
बाहूनां भाग्यहानिमारकक्लेशादिदर्शनात् पक्षोऽयं नाद-  
रणीयः तेन रविचन्द्रयोरष्टमेशत्वप्रयुक्तो दोषो न, यदि  
भवेदर्थादष्टमे भवेत्तदेति भावः पूर्वमन्येषां भावाधि-  
पतीनां त्रिकोणेशत्ववशाच्छुभत्वमुक्तं परं रविशशिनोः  
स्थानान्तराभावादष्टमेशत्वावस्थायामष्टमस्थानस्थितिवशा-  
देवतयोः शुभत्वं स्यादिति सूचितमिति ॥१०-११॥

बृहस्पति और शुक्र सप्तमेश होने से प्रबल मारकेश होते  
हैं । और इन से अल्प बुध और बुध से अल्प चन्द्रमा मारक  
सप्तमेश होने से होते हैं । सूर्य और चन्द्रमा अष्टम स्थान ही में  
यदि हों तो उनको अष्टमेश होने का दोष नहीं होता क्योंकि एक  
राशि के स्वामी होने के कारण अष्टमेश होकर वे त्रिकोणेश  
नहीं हो सकते ॥ १० ॥ ११ ॥

कुजस्य कर्मनेतृत्वप्रयुक्ता शुभकारिता ॥

त्रिकोणस्यापि नेतृत्वेन कर्मेशत्वमात्रतः ॥१२॥

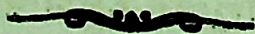


अथकेवलानां प्रसिद्धानां पापानां गुणान्कथयति ।  
 कुजस्य भौमस्य दशमाधीशत्वप्रयुक्ता या शुभकारिता  
 सा त्रिकोणस्यापि स्वामित्वे भवति केवलं दशमेशत्वेनैव  
 नभवतीति । परं पूर्वं भौमस्यशुभफलप्रदत्वकथना  
 भावात् पापग्रहाणां सर्वेषां शुभत्वप्रतिपादनादयमर्थो न  
 साधुः । अत्रतु न दिशन्तीति पूर्वश्लोकोक्तं शुभफल-  
 प्रदत्वं विशिनष्टि । कुजस्यार्थात्पापस्य कुत्सितं जन्म  
 जायते स्वतुङ्गै क्रूरैः क्रूरमतिर्महीपतिरित्यादिना येनाऽ  
 सौकुजः पापः तस्य कर्मनेतृत्वं दशमचतुर्थस्थानाधी-  
 शत्वे याशुभकारिता सा त्रिकोणस्यापि स्वामित्वे भवति  
 दशमेशत्वमात्रतोर्थात् केन्द्रेशत्वेनैव शुभकारिता न  
 भवतीति ॥ १२ ॥

पाप ग्रह के केन्द्राधिपति होने से सामान्य रूप से जो  
 शुभफलदातृत्व उसको कहा गया है वह बिनात्रिकोणेश हुवे  
 नहीं होता—अर्थात् पापग्रह यदि केन्द्रत्रिकोणाधिपति दोनों  
 हो तभी शुभफल देता है ॥ १२ ॥

यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भाववेशसंयुतौ ॥  
 तत्फलानि प्रवलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ ॥१३॥

इत्युद्बुदायप्रदीपे संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥





प्रवलौ तमोग्रहौ राहुकेतू प्रकाशाभावात्तयोः प्राव-  
ल्यम् यद्यद्भावैशसंयुतौ सन्तः यद्यद्भावगतौस्तः तत्त-  
त्फलानि प्रदिशेतामिति । अथ प्रागुक्तस्य स्थानान्तरानु-  
गुण्यस्य कतिपयभेदा अत्र लिख्यन्ते ।

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोतिदुःखितः  
विकलश्च खलः कोपी नवधाखेचरो भवेत् ॥ १ ॥

उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वर्क्षेधिमित्रभे-  
मुदितो मित्रभेशान्तेः समभे दीन उच्यते ॥ २ ॥

शत्रुभे दुःखितोतीव विकलः पापसंयुतः  
खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ॥ ३ ॥

पृथक् पृथक् फलं तेषां दशापाके विशेषतः  
उत्तमाद्यनुरोधेन फलं पाके वदन्ति हि ॥ ४ ॥

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्ये धनवाहने च  
स्त्रीपुत्रलाभं शुभवन्धुपूज्यं क्षितीश्वरान्मानमुपैति विन्ध्यात् ५

स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वस्थो नृपादत्र धनादिसौख्यम् ।  
विद्या यशः प्रीतिमहत्त्वमाराद्वारार्थं भूम्यादिजधर्ममेति ६

मुदान्वितस्यापि दशाविपाके वस्त्रादिभूगन्धसुतार्थधैर्यम् ।  
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं वस्त्रादियानाम्बरभूषणातिम् ॥ ७ ॥

दशाविपाके सुखधर्ममेति शान्तस्य भूपुत्रकलत्रयानम् ।

विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं वद्वर्थदेशाधिपपूज्यताम् ॥ ८ ॥



स्थानच्युतिर्वन्धुविरोधता च दीनस्य खेटस्य दशाविपाके ।  
जीवत्यसौ कुत्सितहीन वृत्यात्यक्तोजनै रोगनिपीडितः स्यात् १  
दुःखार्दितस्यापि दशाविपाके नानाविधं दुःखमुपैति नित्यम् ।  
विदेशगो बन्धुजनैर्विहीनश्चौराग्निभूषेभ्यमातनोति ॥ १० ॥  
वैकल्य खेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनो विकारम् ।  
भित्रादिकानां मरणं विशेषात् स्त्रीपुत्रयानां स्वरचौरपीडाम् ११  
दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्यापि तुर्वियोगम् ।  
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निन्दाम् १२  
कोपान्वितस्यापि दशाविपाके पापाः समायान्ति बहुप्रकारैः  
विद्याधनस्त्रीसुतबन्धुनाशं पुत्रादिकृच्छ्रं त्वथ नेत्ररोगम् १३

राहु और केतु जिस भाव के स्वामी के साथ होकर जिस भाव में होते हैं उनके फलों को देते हैं । इससे यह भी जानना चाहिये कि केवल राहु वा केतु जिस भाव में होते हैं उस भाव का अनिष्ट ही करते हैं ॥ १३ ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥



## अथ योगाध्यायः ।

केन्द्रत्रिकोणपतयः सम्बन्धेन परस्परम् ॥

इतरैरप्रसक्ताश्चेद्विशेषफलदायकाः ॥ १ ॥

अत्राध्याये योगोनाम भाग्ययोगः । केन्द्रस्थानानि प्रथम चतुर्थ सप्तम दशमानि त्रिकोणं नवमं पञ्चमञ्च केन्द्रस्य त्रिकोणस्य च ये स्वामिनो ग्रहाः ते परस्परं वक्षमाणरूपेण परस्परसम्बन्धेन फलदायका भाग्ययोगकर्तारो भवन्ति यदि च इतरैः केन्द्रत्रिकोणातिरिक्तस्थानस्वामिभिरप्रसक्ताश्चेत् स्युस्तदा विशेषफलदायका भवन्ति-यदि च प्रसक्तास्सम्बन्धविशिष्टास्तदाकुत्रचित्फलदायकाः कुत्रचिन्नफलदायका भवन्तीति । यद्यपीतरग्रहास्तृतीयषष्ठाष्टमद्वादश द्वितीयैकादशाधीशास्तथापि-पूर्वाध्याये द्वितीयद्वादशेशयोरन्यस्थानानुरूप गुणकथनात् विशेषतस्सम्बन्धवशादेव तयोः फलकथनात् । अष्टमेशस्यचाग्रे वक्षमाणत्वात् अत्र त्रिषडायेशा एवैतरशब्देन ग्राह्याः शिष्टाचाराच्च । अत्रकैश्चित्कल्पितायुक्तिरपि इ कारेणत्रयः त कारेण षट् इतर शब्देनैकादश परं नेयंयुक्तिः समीचीनेति ॥ १ ॥

केन्द्रत्रिकोणपती परस्पर सम्बन्ध होने से इतर ग्रहों से त्रिषडायाधीश से यदि सम्बन्ध नहीं करै तो विशेष फलदायक भाग्य योग कारक होते हैं ॥ १ ॥



केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावपि स्वयम् ॥

सम्बन्धमात्राद्वलिनौ भवेतां योग कारकौ ॥२॥

केन्द्रत्रिकोणनेतारौ केन्द्रत्रिकोणयोः स्वामिनौ स्वयं दोषयुक्तौ त्रिषडाधीशावपि चेत्स्तस्तदापि सम्बन्धकारणेन बलिनौ योगकारकौ भवेताम् परमत्रपौनरुक्तत्वात्तथा पूर्वं त्रिषडायाधीशसम्बन्धवशाद्योगस्य दौर्बल्यत्वादिदानिन्तु स्वयं दोषयुक्तत्वेपि योग्यप्रावल्यत्वादोषापत्तेः प्रथमं पूर्वश्लोकमेवविचार्यते । केन्द्राधीशाश्चत्वारः । त्रिकोणाधीशौ द्वौ त्रिषडायाधीशास्त्रयः । तत्र योग विभागे—लमेश पञ्चमेशयोः सम्बन्धादेको-योगः चतुर्थेशपञ्चमेशयोस्सम्बन्धात् द्वितीयः सप्तमेशपञ्चमेशयोस्सम्बन्धात्तृतीयः दशमेशपञ्चमेशयोस्सम्बन्धाच्चतुर्थः लमेशनवमेशयोस्सम्बन्धात्पञ्चमः चतुर्थेशनवमेशयोस्सम्बन्धात्षष्ठः सप्तमेशनवमेशयोस्सम्बन्धात्सप्तमः दशमेशनवमेशयोस्सम्बन्धादष्टमः इत्यष्टौ योगाः मुख्याः तत्रापि सम्बन्धवशादनेकेभवन्ति । तत्रत्रिषडायेशानां सम्बन्धवशाद्योगस्य दौर्बल्यम् । तत्र बल विचारार्थं यथा संहितासुवर्णाद्यावलिनोयथोत्तरमितिरीत्या वर्णादीनां रूपोत्तरगुणाः कल्पितास्तथैव गुणानुरोधेनप्रबलाश्चोत्तरोत्तरमित्युक्तत्वात् लमेश्यैकः



चतुर्थस्य द्वौ सप्तमस्यत्रयः दशमस्य चत्वारः पञ्च-  
मस्य द्वौ नवमस्य चत्वारः । तृतीयस्यैकः षष्ठ-  
स्यद्वौ एकादशस्यत्रयोऽङ्गुणाः पूर्वैः कल्पिताः । तत्र लग्ने-  
शपञ्चमेशयोः सम्बन्धवशाद्भाग्ययोगस्य त्रयोऽङ्गुणाः सम्प-  
न्नाः । तत्र तृतीयेशसम्बन्धाद्दशमेशसम्बन्धाद्भाग्ययोगो-  
वशिष्यते । परं लाभेशस्य वा तृतीयषष्ठाधीशयोर्वासम्ब-  
न्धान्न भाग्ययोगः तुल्यशुभपापगुणत्वात् । चतुर्थपञ्च-  
माधीशयोस्सम्बन्धेतद्वत्तृतीयलाभाधीशयोः सम्बन्धवशा-  
द्भाग्ययोगाभावः । सप्तमेशपञ्चमेशसम्बन्धे षष्ठलाभाधी-  
शयोः सम्बन्धाद्भाग्ययोगाभावः दशमेचतुर्थेश योः  
सम्बन्धे तृतीयषष्ठैकादशाधिपानां सम्बन्धवशाद्भाग्ययो-  
गाभावः । तथैव लग्नेशनवमेशयोः सम्बन्धे षष्ठेश  
लाभेशयोः सम्बन्धाद्भाग्ययोगाभावः नवमेशचतुर्थेशयोः  
सम्बन्धे तृतीयषष्ठलाभेशानां सम्बन्धवशाद्भाग्ययोगा-  
भावः । परं सप्तमनवमेशयोः सम्बन्धे त्रयाणां पापानां  
सम्बन्धेनैकोऽङ्गुणो वशिष्यते । तथा दशमेशनवमेशयोः  
सम्बन्धे त्रयाणामपि सम्बन्धसत्त्वे द्वौऽङ्गुणौ भाग्ययोगस्या-  
वशिष्येते । तेन दशमनवमाधीशयोरेव सम्बन्धः  
सर्वसम्बन्धाद्बलीयः अमुमेवार्थमत्र वर्णयति । बलिनौ-  
केन्द्रात्रिकोणनेतारौ दशमनवमाधीशौ स्वयं दोषयुक्तावपि



चेत्स्तस्तदापि सम्बन्धवशाद्योगकारकौ तौ भवेतां सामान्यरूपेणैवेतिशेषः ॥ २ ॥

वलीकेन्द्रत्रिकोण के स्वामी अर्थात् दशमेश और नवमेश ये यदि स्वयं त्रिषडायाधीश हों तौ भी इन में यदि सम्बन्ध हो तो ये योग कारक होते हैं ॥ २ ॥

निवसेतां व्यत्ययेन तावुभौ धर्मकर्मणोः ॥

एकत्रान्यतरोवापि वसेच्चेद्योगकारकौ ॥ ३ ॥

तावुभाविति नवमदशमाधीशौ व्यत्ययेन निवसेतां नवमेशोदशमेदशमेश्वनवमे तदैकोयोगः एकत्र निवसेतां यत्र कुत्राप्येकराशौ भवेतां तदाद्वितीयो योगः अन्यतरोवापि व्यत्ययेन वसेच्चेद्दशमेशोनवमे वा नवमेशो दशमे तदा योगकारकौ भवेताम्-परमत्र पूर्वश्लोकोक्तयोगावैलक्षण्यात् पुनरुक्तिदोषात्केचिदेवं व्याचक्षते । धर्मशब्देन त्रिकोणं कर्मशब्देन केन्द्रस्थानानि ग्राह्याणि । तेन तावुभौ धर्मकर्मणोः केन्द्रत्रिकोणयोर्नेतारौ स्वामिनौ त्रिकोणकेन्द्रयोर्व्यत्ययेन निवसेतां केन्द्रशस्त्रिकोणेत्रिकोणशश्चकेन्द्रे तदैको राजयोगः । एकत्र व्यत्ययेन वाद्वावपि निवसेतां यथा केन्द्रे वा त्रिकोण एव केन्द्रत्रिकोणाधीशौ निवसेतां तदा द्वितीयोयोगः पूर्वापेक्ष्यान्यूनो भवेत् । अथवा एकएवतयोर्मध्ये व्यत्ययेन वसेत्तदा तृतीयोयोगः यथात्रिकोणेशः केन्द्रे वा केन्द्रेशस्त्रि-



कोणे अथवा चेत इत्यनेन केन्द्रेणः केन्द्रे त्रिकोणेश-  
स्त्रिकोणे इतियोगव्यत्ययेन निवसेतां—तदा योगकारकौ-  
भवेतामिति परमत्रापि प्राचीनमतविरोधादस्वारस्याच्चा  
यमर्थोनयुक्तः । तेनात्रग्रन्थ संबन्धस्यैव प्राधान्यात्संबन्धा-  
न्पूर्वयोगसाहचर्येणैव वर्णयति । तावुभौ बलिनौ केन्द्र-  
त्रिकोणनेतारावर्थात् धर्मकर्मणोः स्वामिनौ स्वयंदोषयुक्ता  
वपियदा व्यत्ययेन स्वस्थानयोर्वैपरीत्येन निवसेतामि-  
त्यनेनस्थानसम्बन्धः उक्तः । एकत्र निवसेतामित्यनेनै-  
कत्रस्थितिसम्बन्धः उक्तः । अन्यतरो वाप्यर्थादेको-  
न्यस्यराशौ स्थित्वान्यं पश्यतिचेदित्यनेन साहचर्य  
सम्बन्धः उक्तः । अथ वा वसेच्चेदितिकथनात्तुल्ये  
परस्परदृष्टि योग्ये स्थाने तौ निवसेतामित्यनेनदृष्टि  
सम्बन्धोद्योतितः तदा योगस्यावश्यंभावित्वात्तौ योग-  
कारकौ भवेतां योगकारकौ भवेतामिति द्विरुक्तिः ।  
सम्बन्धोग्रन्थान्तरे ।

व्यत्यस्ताश्रयम्बन्धश्चान्योन्यालोकसम्भवः ।

एकस्य राशौ संस्थित्या तदीशालोकनादपि ॥

सहवासाच्च सम्बन्धा इत्येतेस्युश्चतुर्विधाः ।

अत्रापि पूर्वपूर्वाः स्युः सम्बन्धा बलवत्तराः ॥ ३ ॥

बलीकेन्द्रत्रिकोणार्थात् दशम और नवम स्थान के स्वामी  
(१) परस्पर स्थान में हों (२) या एक राशि में हों (३) एक एक के



राशि में हो दूसरा देखता हो ( ४ ) या परस्पर दृष्टि के स्थान में हों तो प्रबल योग कारक होते हैं इसी प्रकार और ग्रहों में भी सम्बन्ध देखना चाहिये ॥ ३ ॥

त्रिकोणाधिपयोर्मध्ये सम्बन्धो येन केनचित् ॥  
वलिनः केन्द्रनाथस्य भवेद्यदि सुयोगकृत् ॥४॥

अत्र सम्बन्धगुणं दर्शयति ।

त्रिकोणाधिपयोः पञ्चमनवमेशयोर्मध्ये येन केन चित्सह वलिनः केन्द्रनाथस्य लग्नचतुर्थ सप्तम दशमेशानां मध्ये बलवतः सम्बन्धो भवेत्तदा सुयोगकृत् स्यात् । परन्तु पूर्ववैलक्ष्ययात् पञ्चम नवमेशयोर्मध्ये यस्य कस्य केन्द्रनाथान्यतरेण बलवता सह सुयोगकृत् सुयोगं करोतीति स्थानसम्बन्धो भवेत्तदा सुयोगकृत् स्यात्—अथवा वलिनः केन्द्रनाथस्य दशमाधिपतेः पञ्चम नवमाधिपत्यन्यतरेण सह यदि सुयोगकृदर्थान् स्थानसम्बन्धो भवेत्तदा सुयोगकृत् पूर्वलक्षणेन सुफलं विदधातीति ॥ ४ ॥

नवमेश वा पञ्चमेश किसी के साथ यदि दशमेश का स्थान सम्बन्ध हो तो भाग्य योग कारक होता है क्योंकि दूसरे ग्रहों का जो सम्बन्ध होगा वह स्थान सम्बन्ध के बल अल्प बलवान् होगा इस कारण सम्बन्ध के प्रबलता से योग होजायगा ॥ ४ ॥

दशास्वपि भवेद्योगः प्रायशो योगकारिणोः ॥  
दशाद्वयीमध्यगतस्तदयुक् शुभकारिणाम् ॥५॥



प्रायशो बाहुल्येन योगकारिणोः ग्रहयोः या दशा  
द्वयी दशाद्वयसमाहारः । तस्यां तदयुक्शुभकारिणां  
योगकारकग्रहसम्बन्धरहितानां शुभकारिणां दशासु  
अर्थादन्तर्दशासु योगः शुभप्राप्तिर्भवेत् । यथा नव-  
मदशमाधीशयोः सम्बन्धाद्यदि भाग्ययोगः स्यात्तदा  
नवमेशस्य दशमेशस्य वा दशायां पञ्चमाधिपतेरन्तर्द-  
शायां भाग्ययोगावाप्तिः । अथवा योग कारिणोःग्रह-  
योर्या दशाद्वयी एकस्य दशान्यस्यान्तर्दशा यथा नव-  
मदशमाधीशयोः सम्बन्धे दशमेशस्य दशायां नव-  
मेशस्यान्तर्दशा वा नवमेशस्यदशायां दशमेशस्यान्त-  
र्दशा तन्मध्यगतो योगः तदयुक् शुभकारिणां तत्स-  
म्बन्धरहितानां शुभकारिणां दशासु प्रत्यन्तर्दशादिषु  
भवेदित्यर्थः ॥ ५ ॥

किसी योगकारी ग्रह की दशा में उसके सम्बन्धी योगकारी  
की अन्तर्दशा हो तो इन दोनों से सम्बन्धरहित जो शुभग्रह  
उनकी प्रत्यन्तर्दशा में अवश्य शुभफल की प्राप्ति होती है ॥ ५ ॥

योगकारकसम्बन्धात्पापिनोपि ग्रहाः स्वतः ॥  
तत्तद्भूक्त्यनुसारेण दिशेयुर्योगजं फलम् ॥६॥

स्वतः पापिनोपिग्रहाः त्रिषडायाधीशा अपि योग  
कारकसम्बन्धाद्योगकारकग्रहसम्बन्धेन तत्तद्भूक्त्यनु-  
सारेण तत्तद्ग्रहान्तर्दशानुसारेण योगजं फलमेवदि-



श्रेयः अर्थात् योगकारकग्रहेण सह यदि पापानामपि सम्बन्धश्चेत्तदा तत्र यदि भाग्ययोगावशिष्टत्वं स्यात्तदा पापग्रहा अपि स्वदशायां योगकारकग्रहस्यान्तर्दशायां शुभफलमेव द्युरिति । एतेन पापानां दशासु तत्सम्बन्धि शुभभुक्तौ शुभफलमेव स्यादिति सूचितम् ॥६॥

योगकारक ग्रहके साथ सम्बन्ध होने से त्रिषडायाधीश भी अपनी दशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा में शुभफलही देते हैं । अर्थात् योगकारक ग्रहके साथ सम्बन्ध होने से पापी ग्रह की दशा में भी जब शुभदायी ग्रह की अन्तर्दशा होती है तब शुभही फल होता है ॥ ६ ॥

**केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वे योगकारकौ ॥**

**अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धो यदि किंपरम् ॥७॥**

सर्वोत्कृष्टं योगान्तरमाह । केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वे सतियोगकारकौस्तः तत्र यद्यन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धश्चेत्तदाऽतः परं किमपि न स्यात् अतः परराजयोगा भाव इति अत्रैकत्वं तु स्थानाधीशत्वेन सम्बन्धेन च द्विवचनान्तत्वात् । अत्र योग विभागः । वृषभ लग्ने केन्द्रत्रिकोणाधिपः शनिर्योगकर्ता तत्रान्यत्रिकोणाधिपते बुधस्य सम्बन्धो भवेत्तदा प्रवलोयोगः कर्कट लग्ने दशमपञ्चमाधिपतिर्भौमः तेन गुरोः सम्बन्धश्चेत्तदोत्कृष्टो योगः सिंह लग्ने चतुर्थ नवमाधीशोभौमः



पञ्चमाधीशेनगुरुणा सम्बन्धं विदधाति चेत्प्रबलो राज-  
योगः । तुलालग्ने चतुर्थपञ्चमाधीशः शनिः नवमाधी-  
शेनबुधेन सम्बध्यते तदा राजयोगः । मकर लग्ने पञ्च-  
मदशमाधीशः शुक्रो नवमेशेन बुधेन सम्बन्धव्रश्चे-  
त्तदाप्रबलभाग्ययोगः कुंभलग्ने चतुर्थनवमाधीशेन  
शुकेण पञ्चमाधीशो बुधस्सम्बन्धं करोति चेत्तदा प्रव-  
लोराजयोगः । सम्बन्धवशादेकत्वेऽन्यत्रिकोणाधीशेन  
च सम्बन्धे पूर्वदर्शितयोगान्न्यूनो योगो विज्ञेयः ।  
यथा मेषे चतुर्थपञ्चमाधीशयोः शशिसूर्ययोस्सम्बन्धं  
गुरोरपि सम्बन्धश्चेत्तदापि प्रबलोयोगः परं पूर्वापेक्षया-  
ऽस्य न्यूनत्वम् । अन्यत्रिकोणपतिना सहसम्बन्धं वद-  
ताचार्येणत्रिकोणाधिपतेः पापत्वेपि शुभत्वं वर्णितम् ।  
यथा मकरलग्ने अन्यत्रिकोणाधिपतिर्बुधःषष्ठेशः । कर्क  
लग्ने अन्यत्रिकोणाधिपतिर्गुरुः षष्ठेशः । सिंहलग्ने  
अन्यत्रिकोणाधिपतिर्गुरुरष्टमेशः कुंभलग्ने च पञ्चमा-  
धिपतिर्बुधोष्टमर्क्षेशः परमेतेषां सम्बन्धान्भाग्ययोगस्य  
सर्वोत्कृष्टत्वमेव तेनत्रिकोणाधिपतिः केन्द्राधीशेन सम्ब-  
न्धे सर्वथा शुभफलद एवेति ॥ ७ ॥

केन्द्र और त्रिकोण स्थान के स्वामी यदि एक ही हों तो  
योग कारक होते हैं इसमें यदि दूसरे त्रिकोण के स्वामी के  
साथ सम्बन्ध हो तो इससे उत्तम कोई भाग्य योग नहीं होता अथवा



एकही केन्द्रेश के साथ दोनों त्रिकोणेश का सम्बन्ध हो तौभी पर-  
मोत्तम भाग्य योग होता है ॥ ७ ॥

यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ ॥  
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ ॥८॥

राहुकेत्वोः स्थानाभिप्रायेणैव तत्स्वामित्वं यद्यन्ना-  
वगतावित्यादिनोक्तम् । तत्र त्रिकोणे तयोः स्थितौ केन्द्र-  
नाथे न केन्द्रे स्थितौ त्रिकोणाधीशेनचसह सम्बन्धे पूर्व  
परिभाषया योगःस्पष्टतर एवेत्यनेनामुमेवार्थकथयति ।  
यदि तमोग्रहौ राहुकेतू केन्द्रं वात्रिकोणे निवसेतां तदा  
तयोरन्यतरेण नाथेन सम्बन्धाद्योगकारकौ भवेताम् ।  
अत्र केन्द्रेस्थित्या केन्द्रनाथेन त्रिकोणे स्थित्या त्रिकोण-  
नाथेन च सम्बन्धाद्योगविशेषः सूचित इति ॥८॥

केन्द्र या त्रिकोण में यदि राहु वा केतु हों तो केन्द्रेश वा  
त्रिकोणेश किसी के साथ सम्बन्ध होने से वे भाग्य योग कारक  
होते हैं परन्तु केन्द्र में त्रिकोणेश के साथ या त्रिकोण में केन्द्रेश  
के साथ हो तो विशेष योग जानना चाहिये ॥ ८ ॥

धर्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ यदि ॥  
तयोः सम्बन्धमात्रेण न योगं लभतेनरः ॥९॥

धर्मकर्माधिनेतारौ नवमदशमाधीशौ तावेव यदि रन्ध्र  
लाभाधिपावष्टमैकादशाधिपौ तदा तयोः सम्बन्धमात्रेण  
नरो योगं न लभते न प्राप्नोति । परन्तु नवम दशमा-  
धीशयोरष्टमलाभेशत्वासंभवः । यतो नवमेशोलाभेशोन-



भवितुमर्हति तथा दशमेशश्चाष्टमेशो न भवितुं शक्नोति ।  
तथैकत्रैव नवमेशोष्टमेशः दशमेशश्चलाभेशो नभवितुम-  
र्हति । समराश्योर्विषमराश्योश्चाधिपत्याभावात् । तेन  
धर्मकर्माधिनेतारौ यौ अत्र धर्मपदं त्रिकोणबोधकं कर्म-  
पदं च केन्द्रबोधकमर्थात् यौ केन्द्रत्रिकोणाधीशौ । यौ  
चाष्टमलाभाधीशौ तयोः सम्बन्धश्चेत्तदा नरोयोगं न  
लभत इति निष्कृष्टोर्थः । अत्रतुसम्बन्धसत्त्वे नवमेशोष्ट-  
मेशोभवेदथना दशमेशो लाभेशश्चेत्तदायोगस्य न हानिः  
तथा चतुर्थाधीशस्येकादशाधीशत्वे पंचमाधीशस्याष्टमाधी-  
शत्वेयोगस्य न हानिः । पूर्वं दर्शितपरिभाषयात्रिषडैका-  
दशेशानां सम्बन्धे नापि नवमदशमाधीशयोस्सम्बन्धे भा-  
ग्ययोगस्य प्राबल्यम् । परं तथैवाष्टमेशस्य प्रबलपापकर्तृ-  
त्वत्वात् अष्टगुणकल्पने नवमदशमाधीशयोः सम्बन्धे  
लाभाष्टमाधीशयोः सम्बन्धेन योगनाशाद्वा चतुर्थपञ्चम-  
नवमदशमेशानां सम्बन्धेपि तृतीयषष्ठाष्टमलाभाधीशानां  
सम्बन्धेन योगनाशादियं पृथगुक्तिः । इति द्वितीयोध्यायः ।

नवमेशदशमेशके अर्थात् केन्द्रत्रिकोणेशके सम्बन्ध  
में यदि अष्टमेश और लाभेश का सम्बन्ध हो तो भाग्य  
योग नहीं होता ॥ ९ ॥

इति भाषाटीकायां द्वितीयोध्यायः ।



## अथायुर्दायाध्यायः ।

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं चयत् ॥

तयोरपिव्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥१॥

अष्टमं हि आयुषः स्थानमष्टमाद्यदष्टमं तदपि आयुषः स्थानं तयोरपि व्ययस्थानं सप्तमं-द्वितीयं च मारकस्थानमुच्यत इत्यन्वयः भाग्यव्ययत्वादष्टमं मुख्यमायुषः स्थानम् । ततोयदष्टममर्थात्तृतीयं वलसाहसादि कारकत्वात्तदप्यायुषः स्थानम् । तयोः व्ययस्थानं स्त्रीधनकारणत्वान्मारकस्थानं तन्निश्चयेनेति ॥ १ ॥

अष्टम और अष्टम का अष्टम अर्थात् तृतीय ये आयुःस्थान कहलाते हैं । और इनके जो द्वादश अर्थात् सप्तम और द्वितीय ये मारकस्थान कहे जाते हैं ॥ १ ॥

तत्राप्याद्यव्ययस्थानाद्द्वितीयं वलवत्तरम् ॥

तत्रमारकराशावपि आद्यव्ययस्थानात्सप्तमात् द्वितीयं यद् व्ययस्थानं लग्नाद्द्वितीयं तत्प्रवलं मारकस्थानम् यत्तु कैश्चिल्लग्नार्हणनां स्वीकृत्य द्वितीयात्सप्तमं वलवत्तरमित्युक्तं तदयुक्तं क्रामिकगणनायाः प्रावल्यात्सप्तमस्य प्रथममुपादानाच्चेति । अथ मारकसमयस्य वक्षमाणत्वात् तन्निश्चयकारणभूतमायुर्दायनिश्चयं ग्रन्थान्तरात्संगृह्यात्र लिख्यते ।



देहतातनिधनाधिपा यदा लाभवन्धुसुतधर्मसंस्थिताः ॥  
 दीर्घमायुरिह विद्धि तत्परं केन्द्रगाश्च खलुदीर्घदा मताः १  
 सहजवन्धुगताः खलखेचराः पणफरेपि गता यदि केचन ।  
 त इहमध्यमदाः परतश्चये तइह लाघवखण्डकरा मताः ॥  
 अन्यच्च ।

अल्पायुर्लभपेभानोः शत्रौ मध्येच मध्यमम् ।

मित्रेलग्नेश्वरेतस्य दीर्घमायुरुदाहृतम् ।

अन्यच्च ।

आयुः पितृदिने शाभ्याम् ( १ )

प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम् ( २ )

प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम् ( ३ )

मध्ययोराद्यन्तयोर्वाहीनम् ( ४ )

एवंमन्दचन्द्राभ्याम् ( ५ )

पितृकालतश्च ( ६ )

संवादात्प्रामाण्यम् ( ७ )

विसंवादेपितृकालतः ( ८ )

पितृलाभगेचन्द्रे चन्द्रमन्दाभ्याम् ( ९ ) अस्यार्थः ।

लग्नेशाष्टमेशौ यदि चरराशौ वा स्थिरद्विस्वभावयोर्यदिभवत-  
 स्तदादीर्घायुः द्विस्वभाव राशौ वा चरस्थिरयोर्यदिभवत-  
 स्तदामध्यायुः । स्थिरराशौ वा चरद्विस्वभावयोर्यदिभवत-  
 स्तदाल्पायुः । एवमेव यदि चन्द्रो लग्ने वा सप्तमे भवे-  
 त्तदा लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां दीर्घादियोगो



विचार्यः । तथा लग्नहोरालग्नभ्यामपि तथैव विचार्यः । अत्र-  
प्रकारत्रयेणापि यद्येकरूपायुस्तदा तन्निर्विवादमेव । तथा-  
ऽभावे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् । विसंवादे लग्नहोरा  
लग्नभ्यामागतमायुर्ग्राह्यमिति । होरा लग्नानयनम् ।  
घटिकादिकमिष्टं द्विगुणं कृत्वा पञ्चभिर्भजेत्तदा लब्धं  
राश्यादिकं स्यात्तत्सर्वदा स्पष्टरवौ योजनीयं तदाहोरालग्नं  
भवतीति । अथायुः खण्डादिमानम् ।

रसाङ्कैर्गजाभ्रेन्दुभिः शून्यमासौ  
स्त्रिधादीर्घमायुः कलौ संप्रदिष्टम् ॥  
चतुःषष्टिबाह्व्यूशीतिप्रमाणै  
र्मतं मध्यमायुः नृणां वत्सरैः स्यात् ॥१॥  
तथाद्वित्रि (३२) षड्वि (३६) शून्याब्धि  
(४०) वर्षैर्भवेदल्पमायुर्नराणां युगान्तै ॥

अत्रनिश्चयः । पूर्वोक्तयोगैरेकप्रकारेणाल्पायुषिचत्वारिंशत्  
प्रकारद्वयेन षट्त्रिंशत् प्रकारत्रयेणद्वात्रिंशत् । दी-  
र्घायुषि प्रकारेणद्वात्रिंशत् प्रकाराभ्यां षट्त्रिंशत् प्रकारैः  
चत्वारिंशदब्दरूपं खण्डं ग्राह्यम् । मध्येतु । लग्नेशाष्टमे-  
शाभ्यां चत्वारिंशत् लग्नचन्द्राभ्यां वाशनिचन्द्राभ्यां षट्-  
त्रिंशत्लग्नहोरालग्नभ्यां द्वात्रिंशदब्दरूपं खण्डं ग्राह्यम् ।  
वक्षमाणप्रकारेणाल्पायुर्निश्चये खण्डानिश्चयस्त्वत्रैवोक्तो  
ग्राह्यः । अन्यथायुर्निश्चयः ।



पितृलाभरोगेशप्राणिनि कण्टकादिस्थेस्वतश्चैवंत्रिधा ॥१॥  
अस्यार्थः । लग्नसप्तमाष्टमेशयोर्यो वलीसयदि केन्द्रे  
भवेत्तदादीर्घायुः पणफरे मध्यायुः आपोक्लिमेऽल्पायुः ।  
रव्यादिग्रहाणां मध्ये योऽधिकांशः । असावात्मकारकः ।  
तदष्टमेशः तत्सप्तमाच्च योष्टमेशः । अनयोर्योवली स  
यदि कारकात्केन्द्रादिषुस्थितश्चेत्तदा दीर्घाद्यायुः । अत्र  
लग्नं कारकश्च विषमे भवेत्तदाक्रमतः समेतदोत्क्रमत  
अष्टमादिकं ग्राह्यम् । विषमे लग्ने कारको यदि तृतीये  
भवेत्समे यदि लाभगो भवेत्तदा केन्द्रस्थित्या बलवतोष्ट-  
मेशस्याल्पायुः पणफरे मध्यायुः आपोक्लिमेदीर्घायुः । परं-  
यदि कारक एवाष्टमेशोभवेद्वाष्टमेशस्य कारकेण सहयुतौ  
सर्वदा मध्यायुरेवेति संक्षेपत आयुर्विचारः ॥

सप्तम और द्वितीय इन दो मारक स्थानों में सप्तम से द्वितीय  
प्रबल मारक होता है । यहाँ पर संक्षेप से आयुर्दाय का विचार  
लिखते हैं । लग्नेश यदि सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु सम हो तो  
मध्यायु शत्रु हो तो अल्पायु जानना १ लग्नदशम और अष्टम के  
स्वामी केन्द्र या एकादश वा त्रिकोण में हो तो दीर्घायु करते हैं  
और जो केन्द्र में हो वे दीर्घायु करते हैं । तृतीय और चतुर्थ में  
पापग्रह हो वा पणफर में कोई ग्रह हो तो वह मध्यायु करता है  
इससे अन्य स्थान गतग्रह अल्पायु करते हैं ।

लग्नेश और अष्टमेश यदि चर राशि में हों वा एक स्थिर  
में और दूसरा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घायुः । दोनों स्थिर में  
हो वा एक चर में और दूसरा द्विस्वभाव में हो तो अल्पायु । दोनों

3114



द्विस्वभाव में हो वा एक स्थिर में दूसरा चर में हो तो मध्यायु जानना । लग्न या सप्तम में यदि चन्द्रमा हो तो लग्न चन्द्रमा से अन्यथा शनि चन्द्रमा से और जन्म लग्न तथा होरा लग्न से भी इसी प्रकार आयुर्दाय का विचार करना चाहिये । इसमें तीनों प्रकार से वा दो प्रकार से जो आवे उसको मानना यदि तीनों प्रकार से तीन प्रकार का हो तो जन्म लग्न और होरा लग्न से जो आवे उसको मानना चाहिये । लग्न यदि विषम हो तो क्रम से सम हो तो उत्क्रम से जो अष्टमेश और द्वितीयेश हो उनमें जो बलवान हो वह केन्द्र में हो तो दीर्घायुः । पण फर में हो तो मध्यायु । आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होता है इसी प्रकार कारक का जो अष्टमेश और द्वितीयेश हो उनमें जो बलवान हो वह यदि कारक से केन्द्रादि में हो तो दीर्घ मध्य और अल्प क्रम से जानना चाहिये । लग्न विषम हो तो यदि कारक तृतीय में हो सम लग्न होने पर यदि एकादश में हो तो केन्द्र में अल्पायु पणफर में मध्यायु आपोक्लिम में दीर्घायु जानना चाहिये । और कारक तथा अष्टमेश एकही हों वा एक साथ बैठे हों तो सर्वदा मध्यायु ही जानना ॥

तदीशितुस्तत्र गताः पापिनस्तेन संयुताः ॥२॥  
 तेषां दशाविपाकेषु संभवे निधनं नृणाम् ॥  
 तेषामसंभवे साक्षाद्वययाधीशदशास्वपि ॥३॥

ग्रन्थान्तरादायुषो निश्चयं कृत्वा तदीशितुर्मारकेशस्य दशाविपाकेषु दशान्तर्दशादिरूपसमयेषु तत्रगताः मारकस्थानगता ये पापिनस्तेषां दशान्तर्दशादिषु वा तेन मारकेशेन संयुता ये पापिनो ग्रहास्तेषां दशान्तर्दशादिषु संभवे आ-



युषः समाप्तौ निधनं नृणां स्यादिति । तेषां मारकमारक-  
स्थानगतमारकेशयुतानां दशादिसमयानामसंभवेऽप्राप्तौ  
साक्षाद्वययाधीशस्य लग्नात् द्वादशाधीशस्य दशासु निधनं  
स्यादिति ॥ २ ॥ ३ ॥

मारकेश ग्रहकी दशादि समय में मारक स्थान में वा मारकेश  
ग्रह के साथ जो पापी ग्रह त्रिषडायेश हो उनकी दशान्तर्दशादि में  
यदि आयुर्दाय का अन्त होता हो तो निधन कहना और यदि  
आयुः खण्ड के समाप्ति समय में इन ग्रहों के दशादि समय की  
प्राप्ति न होतो लग्न से जो द्वादशेश उसके दशान्तर्दशादि रूप  
समय में मरण कहना ॥ २ ॥ ३ ॥

अलाभे पुनरेतेषां सम्बन्धेन व्ययेशितुः ॥  
क्वचिच्छुभानां च दशाष्टमेश दशासु च ॥ ४ ॥

पुनश्चैतेषां द्वादशेशसमयानामलाभे व्ययेशितुर्व्ययेश-  
स्य सम्बन्धेन क्वचिच्छुभानां च दशानिधनदा । तथाष्टमे-  
शदशासु दशान्तर्दशादिरूपसमयेषु मरणं वाच्यमित्यर्थः ॥ ४ ॥

यदि पूर्वोक्त ग्रहों की दशा न मिलती हो तो द्वादशेश के  
सम्बन्ध से कहीं कहीं शुभ ग्रहों की भी दशा में मरण कहना और  
यदि इनकी दशा की भी प्राप्ति न हो तो अष्टमेश की दशा अन्त-  
र्दशा और प्रात्यन्तर्दशादि समय में मरण कहना ॥ ४ ॥

केवलानाश्रपापानां दशासु निधनं क्वचित् ॥  
कल्पनीयं बुधैर्नृणां मारकाणामदर्शने ॥ ५ ॥

क्वचित् कुत्रापि पूर्वोक्तानां मारकाणामदर्शनेऽप्राप्तौ



केवलानाञ्चपापानां त्रिषडायाधीशानां दशासुनृणां निधनं  
कल्पनीयम् । अत्रायुः खण्डस्यापूर्तो समागतायां  
मारकदशायां शारीरकक्लेशस्यैव प्रावल्यं न तु मारक-  
योग इति ॥ ५ ॥

पूर्वोक्त किसी मारक ग्रह की दशा यदि नहीं मिलती हो  
तो केवल पाप ग्रह की दशा में ही मरण जानना आयुर्दाय रहते  
यदि मारक ग्रह की दशा आवै तो उसमें शारीरक कष्ट ही  
कहना चाहिये ॥ ५ ॥

मारकैः सहसम्बन्धान्निहन्ता पापकृच्छनिः ॥  
अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्येव न संशयः ॥ ६ ॥

पापकृच्छनिः प्रकृत्या पाप फल कर्ता शनिः वा  
त्रिषडायाधीशत्वेन पापकृच्छनिः मारकैः मारकेशग्रहैः  
सह सम्बन्धात्सर्वान्मारकानतिक्रम्योल्लंघ्य निहन्ता मा-  
रकः स्यादत्र न संशयो न सन्देहः । यदा च शनेः  
पापकर्तृत्वेन मारकसम्बन्धात्प्रवलं मारकेशत्वं स्यात्  
तदा मारकाधीशस्य शनेः मारकैर्वा पापग्रहैः सम्बन्धा-  
दतीवप्रावल्यमिति । अत्र मारकलक्षणे येन केन प्रका-  
रेणापि पापत्वस्यैव मुख्यत्वमिति ॥ ६ ॥

पाप फल करने वाला जो शनि वह मारक ग्रहों के साथ  
सम्बन्ध करने से सब मारक ग्रहों को लांघ कर आपही मारक  
होता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ६ ॥

॥ इत्यायुर्दायाध्यायः ॥



## अथ दशाफलाध्यायः ।

न दिशेयुर्ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वभुक्तिषु ॥  
 शुभाशुभफलं नृणामात्मभावानुरूपतः ॥१॥  
 आत्मसंबन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः ॥  
 तेषामन्तर्दशास्वेव दिशन्ति स्वदशाफलम् ॥२॥

सर्वे ग्रहाः शुभाः पापाः वा स्वदशासु षडब्दादि-  
 रूपासु वा स्व भुक्तिषु स्वान्तर्दशासु आत्मभावानुरूपतः  
 आत्मनो भाव आत्मभावस्तदनुरूपतः तदनुसारेण  
 यच्छुभाशुभफलं तन्नदिशेयुरित्यर्थः । परन्तु स्वा स्वां  
 दशामुपगताः स्वफलप्रदाः स्युरित्यादिनात्रविरोधः !  
 तेन स्वदशासु स्वभुक्तिस्वर्थात्स्वदशायामेव या स्व-  
 कीयान्तर्दशा तस्यामेव स्वभावानुरूपं फलं न दिशेयुः ।  
 स्वभावानुरूपं पापफलप्रदाः पाप फलं शुभफलप्रदाः  
 शुभफलं न दिशेयुः । अथवात्मभावानुरूपो योभाव-  
 स्ततो यत्फलमर्थात् स्वस्थितभावोत्पन्नं यत्फलं तन्नद-  
 द्युरित्यर्थः । तर्हि कदा सम्पूर्णफलं दद्युरित्याकांक्षायामाह ।  
 ये ग्रहा आत्मसम्बन्धिनः स्थानसम्बन्धादिसम्बन्ध  
 चतुष्टयान्यतमसम्बन्धयुतः तेषामन्तर्दशासु स्वदशा-  
 यामेव वा सम्बन्धि ग्रहाभावे ये ग्रहा निजसधर्मिणः  
 निजफलानुरूपफलदातारः यथा त्रिषडायेशाः परस्पर-



सधर्मिणाः त्रिकोणेशौ परस्परसधर्मिणौ तथैव द्वितीय  
द्वादशाधीशौ सधर्मिणौ अथवा लग्नसप्तमेशयोः द्विती-  
यद्वादशेशयोः तृतीयलाभेशयोः चतुर्थदशमेशयोः पञ्च-  
नवमेशयोः षष्ठाष्टमेशयोश्च परस्परं सधर्मित्वम् । एवं ये  
स्वसधर्मिणः तेषामन्तर्दशासु स्वदशायामेव स्वदशा-  
फलं पूर्णतया ग्रहा दिशन्तीति ॥ १ ॥ २ ॥

इस अध्याय में ग्रहों के स्वभाव का वर्णन है । सभी ग्रह  
अपनी दशा और अपनी ही अन्तर्दशा में अपने भावानुरूप शुभा-  
शुभ फल नहीं करते किन्तु जो ग्रह अपना सम्बन्धी हो वा जो ग्रह  
अपना निज सधर्मी होते हैं उनकी अन्तर्दशा में अपनी ही दशा में  
अपने स्वभावानुरूप फल ग्रह करते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

इतरेषां दशानाथविरुद्धफलदायिनाम् ॥

तत्तत्फलानुगुण्येन फलान्यूह्यानि सूरिभिः ॥ ३ ॥

इतरेषां सम्बन्धादिरहितानां ग्रहाणां अतएव विरुद्ध  
फलदायिनाम् दशानाथेन विरुद्धफलदा ये तेषामन्तर्द-  
शासु तत्तत्फलानुगुण्येन दशानाथस्यान्तर्दशानाथस्य  
च यद्यत्फलं तदानुगुण्येन दशानाथफलानि सूरिभिर्ज्ञे-  
यानीतियत्तु कैश्चिदात्मसम्बन्धात्मसधर्मिग्रहाणामलाभे  
दशानाथस्य फलमुक्तं तदसङ्गतम् । सधर्मिग्रहस्याभा-  
वाभावात् । तेन ये ग्रहा दशानाथस्यात्मसम्बन्धिनो ये  
चात्मसधर्मिणस्तेतु तदनुरूपफलप्रदा एवेति पूर्वश्लोकेन



ध्वनितं तर्हि ये ग्रहा सम्बन्धादिरहितास्ते इतरा अतएव  
दशानाथेन भिन्नफलदाः तेषामन्तर्दशासु दशान्तर्दशा-  
नाथयोः फलानुगुण्येन तयोः फलतारतम्येन फलानि-  
सूरिभिर्ज्ञेयानीति निश्चितोर्थः अर्थाद्यदा दशान्तर्दशानाथौ  
शुभफलदौ तर्हितत्र शुभफलं यदि च पाप फलदौ  
तत्र पापफलं यत्रैकः शुभ एकः पापस्तत्रमिश्रितं  
फलमिति ॥ ३ ॥

दशानाथ के सम्बन्धादि से रहित जो दशा नाथ के विरुद्ध  
फल देने वाले ग्रह उनकी अन्तर्दशा में दोनों के फलों के तारतम्य  
से फल जानना चाहिये ॥ ३ ॥

स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ केन्द्रपतिः शुभम् ॥  
दिशेत्सोपि तथा नोचेदसम्बन्धेन पापकृत् ॥४॥

वस्तुतस्त्वत्रदशाध्याये पूर्वोक्तास्त्रयः श्लोका एवमु-  
ख्याः स्वदशायामित्याद्यारभ्यतानेव सम्बन्ध विशेषेण  
ग्रहस्वभाव विशेषेण च विवृणोति । पूर्वं केन्द्रेशस्य  
त्रिकोणाधीशसम्बन्धेन शुभफलप्रदत्वं द्वितीयाध्याये प्रति-  
पादितं सबन्धाभावे सति केन्द्रेशस्य पापफलप्रदत्वमेवेति  
दर्शयति । त्रिकोणेशसम्बन्धविशिष्टः केन्द्रपतिः स्वद-  
शायां त्रिकोणेशस्य भुक्तावन्तर्दशायां शुभफलं दिशेत्  
तथा सोपि त्रिकोणेशोपि स्वदशायां केन्द्रेशस्यान्तर्दशा-  
यां शुभं फलं दिशेत् एवं नो चेदर्थसम्बन्धाभावश्चेत्त-



दा असम्बन्धेन सम्बन्धराहितेन हेतुना स्वदशायां केन्द्रपतिः त्रिकोणेशस्यान्तर्दशायां तथा त्रिकोणेशः केन्द्रेशस्यान्तर्दशायां च पापकृत पाप फल कर्ता एव स्यात् यत्तु कैश्चिदसम्बन्धेन पापकृतकेन्द्रपतिः स्वदशायां त्रिकोणेशान्तर्दशायां शुभं फलं ददाति । तथा त्रिकोणशोऽपि पापकृत स्वदशायां केन्द्रेशभुक्तौ शुभं दिशेदित्यादिकमुक्तं तत्तु त्रिकोणेशस्य पापत्वाभावात् पापायदि “दशानाथा शुभानां तदसंयुजाम् भुक्तयः पापफलदा” इत्यादि वक्ष्यमाणेन विरुद्धम् ॥ ४ ॥

सम्बन्ध होने से केन्द्रेश अपनी दशा में और त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में शुभ फल देता है और वैसेही त्रिकोणेश भी अपनी दशा में और केन्द्रेश की अन्तर्दशा में शुभ फल देता है और यदि सम्बन्ध नहीं हो तो केन्द्रपति अपनी दशा और त्रिकोणेश की अन्तर्दशा में पाप ही फल को करता है ॥ ४ ॥

आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारकभुक्तिषु ॥

प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशः पापभुक्तयः ॥५॥

यदि राजयोगस्यारंभो मारकग्रहान्तर्दशासु भवेत् । मारकग्रहान्तर्दशासु राजयोगारंभः योगकारकग्रहेण मारकग्रहस्य सम्बन्धवशात्सम्पद्यते । तदा ततः परं याः पापभुक्तयस्तास्तास्तमारभ्य प्रथयन्ति तं राजयोगं प्रथयन्ति विस्तारयन्ति । अथवा यदि मारकग्रहान्तर्दशासु



राजयोगारंभो भवेत्तदाताः पापभुक्तयः मारकग्रहान्तर्दशाः  
तमारम्यार्थाद्राजयोगमारभ्य पापभुक्तय इत्युक्तत्वात्पाप-  
फलमेव प्रथयन्ति । अथवा तं पुरुषं प्रथयन्ति प्रथामा-  
त्रयुक्तं कुर्वन्ति नहि राज्ययुक्तमिति । पापभुक्तिषु पाप-  
फलस्यैव प्राधान्यत्वात् ॥ ५ ॥

यादि राजयोग का आरंभ योगकारी ग्रह की दशा में मार-  
कग्रह की अन्तर्दशा में हो तो पूर्ण योग नहीं होता केवल आरंभ  
में ही शुभ फल होकर पीछे आभासतः शुभ फल होता है ।  
ऐसाही शुभग्रह की अन्तर्दशा में यदि पापफल होता हुवा देखा  
जाय तो केवल आरंभ ही में उसका आधिक्य होकर पीछे क्रमशः  
नामही का वह रहता है । जैसे मेष लग्न वाले को चन्द्रमा  
बृहस्पति और शुक्र तीनों ग्रह का सम्बन्ध हो तां चन्द्रमा और  
बृहस्पति के सम्बन्ध से “केन्द्रत्रिकोण पतयः सम्बन्धेनपरस्परम्”  
इस श्लोक के अनुसार भाग्य योग हुवा इस में शुक्र मारक ग्रह  
का सम्बन्ध है । तो सम्बन्ध के कारण शुक्र की अन्तर्दशा में भी  
कुछ पहले शुभ फल होकर पीछे मारक सम्बन्धी भी फल होगा ॥५॥

तत्सम्बन्धि शुभानां च तथा पुनरसंयुजाम् ॥  
शुभानान्तु समत्वेन संयोगो योगकारिणाम् ॥६॥

योगकारकदशानाथसम्बन्धि शुभानां तथा पुनः  
असंयुजां योगकारिणां शुभानां दशानाथ सम्बन्धरहि-  
तानां पृथग्योगकारिणां शुभग्रहाणां संयोगो दशादशा  
संयोगः समत्वेन स्यात् समभावेन फलदः स्यादिति



भुक्तिनाथयोः सधर्मित्वं दर्शितम् । तथा पूर्वोक्तस्वदशायां  
त्रिकोणेशभुक्तावित्यादेर्विशेषश्चप्रतिपादितः ॥ ६ ॥

दशानाथ यदि योग कारक ग्रह हो तो उसकी दशा में उस  
से सम्बन्ध करने वाले योगकारी ग्रहकी अन्तर्दशा में जैसा  
फल होता है वैसाही उससे नहीं सम्बन्ध करने वाले योगकारी  
ग्रह की भी अन्तर्दशा में होता है ॥ ६ ॥

अन्यद्विशेषमाह ।

शुभस्यास्य प्रसक्तस्य दशायां योगकारकाः ॥

स्वभुक्तिषुप्रयच्छन्ति कुत्रचिद्योगजंफलम् ॥७॥

योगकारकग्रहाः प्रसक्तस्य सम्बन्धवतोऽस्यशुभग्र-  
हस्य दशायां स्वभुक्तिषुच कुत्रचिद्योगजं फलं प्रयच्छन्ति ।  
राजयोगकारकसम्बन्धिग्रहदशायां यदा राजयोगकार-  
कस्यान्तर्दश॥ समायति तदापि राजयोगोभवतीति आत्म-  
सम्बन्धिनो येचेत्यत्रविशेषस्वभावरूपफलोक्तिः ॥ ७ ॥

योग कारक ग्रह अपने सम्बन्धि शुभ ग्रह की दशा में और  
अपनी अन्तर्दशा में भी कहीं कहीं योगज शुभ फल को देता  
है यह बात शुक्र और शनि में ही होती है ॥ ७ ॥

तमोग्रहौ शुभारूढावसम्बन्धेन केनचित् ॥

अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योग कारकौ ॥ ८ ॥

राहुकेत्वोर्विशेषमाह । तमोग्रहौ राहुकेतू यदि शुभा  
रूढौ शुभस्थानं गतौ शुभं नवमं तत्साहचर्यात्पञ्चमञ्च



तत्र यदि समवस्थितौ स्यातां तदा सम्बन्धवशात्पूर्व  
योगकारित्वं तयोक्तमेव सम्बन्ध रहितत्वेपि शुभ-  
स्थानस्थितिमात्रेणैव योगकारकग्रहदशायां स्वस्वान्तर्दशायां  
तौ योगकारकौ भवेतामिति ॥ ८ ॥

राहु केतु यदि शुभ स्थान में त्रिकोण में हों तां योग कारक  
ग्रह की दशा में अपनी अन्तर्दशा में योगकारी ग्रह से सम्बन्ध न  
होने पर भी योगज शुभफलको ही देते हैं ॥ ८ ॥

॥ इति दशाफलाध्यायः ॥





## अथ मिश्रकाध्यायः ।

पापाः यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम् ॥  
 भुक्तयः पाप फलदास्तत्संयुक् शुभभुक्तयः ॥ १ ॥  
 भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम् ॥  
 अत्यन्तपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम् ॥ २ ॥

यदि दशानाथाः पापाः तदा तदसंयुजां तत्सम्बन्ध-  
 रहितानां शुभानां भुक्तयोन्तर्दशाः पापफलदाः तत्  
 संयुक् शुभभुक्तयः दशानाथसम्बन्धविशिष्टानां शुभानां  
 भुक्तयोन्तर्दशाः मिश्र फलदा भवन्ति तथा तदसंयुजां  
 तेन पापदशानाथेन सम्बन्धरहितानां योगकारकशुभानां  
 भुक्तयोत्त्यन्तपापफलदा भवन्तीति ॥ १ ॥ २ ॥

यदि दशानाथ पापी ग्रह हो तो उससे नहीं सम्बन्ध करने  
 वाले शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में पापफलही होता है और सम्बन्धी  
 शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में मिश्र फल होता है और नहीं सम्बन्ध  
 करते हुवे योगकारक शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में अत्यन्त पाप  
 फल होता है ॥ १ ॥ २ ॥

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु ॥  
 हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु ॥ ३ ॥



स्वेन सम्बन्धे सत्यपि मारकः स्वदशायां शुभग्रहान्तर्दशायां न मारयति तथा सम्बन्धाभावेपि पापग्रहान्तर्दशासु हन्ति ॥ ३ ॥

मारक ग्रह अपनी दशा में अपने सम्बन्धी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में नहीं मारता पर सम्बन्ध रहित जो पाप ग्रह उस की अन्तर्दशा में मारता है ॥ ३ ॥

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ ॥

व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम् ॥४॥

सूर्यजभार्गवौ शनिशुक्रौ परस्परदशायां स्वभुक्तौ शुक्रान्तर्दशायां शनिः शनेरन्तर्दशायां शुक्रः इति पूर्वोक्तलक्षणव्यत्ययेन लक्षणेन विशेषेण शुभाशुभं प्रदिशेताम् ॥ ४ ॥

शनि और शुक्र परस्पर दशा और अपनी अन्तर्दशा में इसी व्यत्यय से विशेष करके अपना फल देते हैं अथवा शुक्र, शनि सम्बन्धी और शनि, शुक्र सम्बन्धी फल करता है ॥ ४ ॥

कर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ ॥

राजयोगावितिप्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ५ ॥

धर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ ॥

राजयोगावितिप्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ६ ॥

इत्युद्गदायप्रदीपः समाप्तः ।



कर्मलग्नाधिनेतारौ लग्नदशमाधीशौ यद्यन्योन्या  
 श्रयसंस्थितौ तदाराजयोगावितिप्रोक्तमत्र जातोनरो  
 विख्यातो विजयी च भवेत् । तथा लग्ननवमाधीशौ यदि  
 परस्परस्थानगतौ तदा राजयोगाविति भवतः अत्र  
 जातोनरो विख्यातां विजयी च भवेत् । अत्रतु पूर्व  
 लक्षणेन पुनरुक्ति दोषः । परं केन्द्रत्रिकोणाधीशयोः  
 सम्बन्धाभावं भाग्ययोगस्थाप्यभावः केन्द्रेशयोः सम्ब-  
 न्धात् भाग्ययोगकथनाभावात् । अतोऽत्र प्रथमश्लोके  
 लग्नस्यत्रिकोणत्वख्यापनार्थं द्वितीयश्लोके च केन्द्रत्वख्या-  
 पनार्थं पृथगुक्तिः तेन न पुनरुक्तिदोषः । प्रथमश्लोके च  
 कर्मपदं केन्द्रबोधकं अन्योन्याश्रयपदं सम्बन्धबोधकं  
 द्वितीयश्लोकेतु धर्मपदं त्रिकोणबोधकं शेषं तथैव ।  
 द्वयोर्दशायां योगस्य प्राधान्यात् योगावितिद्विवचनान्तं  
 पदमिति । क्वचित्पुस्तकेषु धर्मकर्माधिनेतारावित्युक्तं  
 तदसङ्गतमिति ॥ ५ ॥ ६ ॥

लग्नेश और कर्मेंश अर्थात् केन्द्रेश यदि सम्बन्ध करते हों  
 तो राज योग होते हैं इनमें मनुष्य विख्यात और विजयी होता है ।  
 लग्नेश और धर्मेंश अर्थात् त्रिकोणेश परस्पर स्थान में हों  
 अर्थात् सम्बन्ध करते हों तो मनुष्य विख्यात और विजयी  
 होता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

इत्युदुदायप्रदीपापरनामा लघुपाराशरी टीकाद्वयोपेता समाप्ता ।



श्रीगणेशायनमः ।

ॐ अथ मध्यपाराशरी प्रारम्भः ॐ

पराशरमुनिनित्वा तस्यहोरां निरीक्ष्य च ॥  
वक्ष्येप्युदशामार्गं पूर्वशास्त्रानुसारतः ॥ १ ॥  
आदित्यप्रमुखाः खेटास्तथा मेषादिराशयः ॥  
लोकस्यैवोपकारत्वं कर्तुमर्हन्ति सर्वदा ॥ २ ॥  
प्रथमं नवमं चैव धनमित्युच्यते बुधैः ॥  
चतुर्थं दशमं प्रोक्तं सुखमेव मनीषिभिः ॥ ३ ॥  
अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत् ॥  
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ४ ॥  
चन्द्रभानू विनासर्वे मारका मारकाधिपाः ॥  
षष्ठाष्टमव्ययेशास्तु राहुकेतू तथैव च ॥ ५ ॥  
आद्यन्तपौ च विज्ञेयौ चन्द्राक्रान्ताद्ग्रहौ नृणाम् ॥  
स्वरद्रेढकाणपश्चैव तथा वैनाशिकाधिपः ॥ ६ ॥  
विपत्ताराप्रत्यरीशौ वधभेशस्तथैव च ॥  
मारका जातके प्रोक्ता कालविद्धिर्मनीषिभिः ॥ ७ ॥  
अथापरं प्रवक्ष्यामि राजयोगादि संभवम् ॥  
ग्रहाणां स्थानभेदेन राशिद्वष्टिवशात्फलम् ॥ ८ ॥



॥ अथादौग्रहस्थानानि ॥

जन्मकालेतु संप्राप्ते लभं निश्चित्यपाण्डितैः ॥  
 तस्मिन्काले खचराणां चारंनिश्चित्ययोजयेत् ॥ ९ ॥  
 पूर्वमायुः परीक्षयेत् पश्चात्लक्षणमेवच ॥  
 नोचेत्तुलक्षणज्ञाने ह्यायाशो व्यर्थमाप्नुयात् ॥ १० ॥  
 पुनस्तन्वादयोभावाः स्थाप्यास्तेषां शुभाशुभम् ॥  
 लाभं तृतीयं रन्ध्रं च शत्रुस्थानं व्ययं तथा ॥ ११ ॥  
 एषां योगेन योभावस्तन्नाशं प्राप्नुयादध्रुवम् ॥  
 चत्वारोराशयो भद्राः केन्द्रकोणशुभावहाः ॥ १२ ॥  
 तेषां संयोगमात्रेण ह्यशुभोपि शुभो भवेत् ॥  
 केन्द्राश्चतस्रो विख्याता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १३ ॥  
 तेषां मध्ये तु शुभदौ कर्मबन्धू विशेषतः ॥  
 अथयोगविभागन्तु वच्मि पूर्वानुसारतः ॥ १४ ॥  
 पश्यन्ति सप्तभं सर्वे शनिजीव कुजाः पुनः ॥  
 विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् ॥ १५ ॥  
 लक्ष्मीस्थानं त्रिकोणस्याद्विष्णुस्थानं तु केन्द्रम् ॥  
 तेषां संयोगमात्रेण चक्रवर्तीनरो भवेत् ॥ १६ ॥  
 तपस्थानाधिपो मन्त्रे मन्त्रनाथेयवागुरौ ॥  
 उभावन्योन्यसंदृष्टौ जातश्चेद्द्वहुराज्यभाक् ॥ १७ ॥



यत्र कुत्रापि संयुक्तौ तौ चापि समसप्तगौ ॥  
 राजवंशोद्भवो वालो राजा भवति निश्चितम् ॥ १८ ॥  
 बाहनेशे तथामाने मानेशे बाहने गते ॥  
 बुद्धिधर्माधिपाभ्यान्तु दृष्टौ चेद्बहुराज्यभाक् ॥ १९ ॥  
 मन्त्रेशकर्मेंशसुखेशलग्ननाथास्तथा धर्मपसंयुताश्चेत् ॥  
 नृपोद्भवश्चेद्बहुवारणाश्चैः स्वतेजसाव्याप्तदिन्तरालम् २०  
 सुखकर्माधिपौ चैव मन्त्रनाथेन संयुतौ ॥  
 धर्मनाथेन संदृष्टौ जातश्चेद्बहुराज्यभाक् ॥ २१ ॥  
 सुतेश्वरो धर्मपसंयुतश्चेल्लग्नेश्वरेणापि युतो विलग्नः ॥  
 सुखेथवा मानगृहेथ वास्याद्राज्याभिषिक्तोयदिराजवंश्यः २२

॥ इति प्रथम परिच्छेदः ॥

अथापरं प्रवक्ष्यामि धनयोगं विशेषतः ॥  
 ग्रहाणां स्थानभेदेन राशि दृष्टिवशात्तथा ॥ १ ॥  
 ये येग्रहा धर्मपबुद्धिपाभ्यां युक्ताश्चदृष्टाश्च सुखप्रदास्ते ॥  
 रेन्ध्रेश्वरारिव्ययपैर्युताः स्युःशोकप्रदा मारकनायकैश्च ॥ २ ॥  
 क्ररसौम्यविभागेन स्वस्थानादिवशात्तथा ॥  
 साहचर्याच्च योगानां धनयोगान्प्रकल्पयेत् ॥ ३ ॥  
 धर्मस्थाने गुरुक्षेत्रे गुरुक्रयुते तथा ॥  
 पञ्चमाधिपयुक्तेवा बहुद्रव्यस्यनायकः ॥ ४ ॥



पञ्चमे सोमजक्षेत्रे तस्मिन्सौम्ययुते यदि ॥  
 लाभेसचन्द्रोभौमस्तु बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ५ ॥  
 पञ्चमे तु भृगुक्षेत्रे तस्मिञ्छुके ससोमजे ॥  
 लाभेशनैश्चरयुते बहुद्रव्यस्यनायकः ॥ ६ ॥  
 पञ्चमेतु रविक्षेत्रे तस्मिन्नवियुते यदि ॥  
 लाभे देवेन्द्रपूज्ये तु बहुद्रव्यस्यनायकः ॥ ७ ॥  
 पञ्चमेतु शनि क्षेत्रे तस्मिन्सूर्यज संयुते ॥  
 लाभेश आत्मजयुते बहुद्रव्यस्यनायकः ॥ ८ ॥  
 पञ्चमेतु गुरुक्षेत्रे तस्मिन् गुरुयुते यदि ॥  
 लाभे सचन्द्रसौम्येतु बहुद्रव्यस्य नायकः ॥ ९ ॥  
 पञ्चमेतु शशिक्षेत्रे तस्मिञ्छशियुतेयदि ॥  
 लाभे भौमेन संयुक्ते बहुद्रव्यस्यनायकः ॥ १० ॥  
 भानुक्षेत्रेगते लग्ने तस्मिन् भानौयुते यदि ॥  
 यदि भौमेन गुरुणा दृष्टे स्यादयुतैर्धनैः ॥ ११ ॥  
 चन्द्रक्षेत्रे गते लग्ने तस्मिञ्चन्द्रेगते यदि ॥  
 जीवभौमयुते दृष्टे जातो धनयशोर्चितः ॥ १२ ॥  
 भौमक्षेत्रे गतेलग्ने तस्मिन्भौमेन संयुते ॥  
 गुरुचन्द्रयुते दृष्टे जातोधनयशोर्चितः ॥ १३ ॥  
 बुधक्षेत्रेगते लग्ने तस्मिन्सौम्ययुते यदि ॥  
 गुरुचन्द्रयुतेदृष्टे जातोधनयशोर्चितः ॥ १४ ॥



शुक्रक्षेत्रेगते लग्ने तस्मिञ्छुक्रेणसंयुते ॥  
 शनि सौम्ययुतेदृष्टे जातो धनयशोन्वितः ॥ १५ ॥  
 शनिक्षेत्रेगते लग्ने तस्मिञ्छानियुते यदि ॥  
 बुधशुक्रयुते दृष्टे जातो धनयशोन्वितः ॥ १६ ॥

॥ इति द्वितीयपरिच्छेदः ॥

अथापरं प्रवक्ष्यामि दारिद्र्यं दुःखकारणम् ॥  
 क्रूरखेटादियोगश्च दारिद्र्यं संभवेन्नृणाम् ॥ १ ॥  
 येयेग्रहा धर्मपवुद्धिपाभ्यां युक्ता न दृष्टा बहुदुःखदास्ते ॥  
 रन्ध्रेश्वरारिढ्ययपैर्युताये व्ययप्रदा मारकनायकेन ॥ २ ॥  
 लग्नाधिपे रिष्फगते रिष्फेशे लग्नमागते ॥  
 मारकेशयुते दृष्टे जातस्य निधनं वदेत् ॥ ३ ॥  
 लग्नाधिपे शत्रुगृहे गतेवा षष्ठेश्वरे लग्नगतेऽथवास्ते ॥  
 विलग्नपे मारकनाथदृष्टे जातो भवेन्निर्धर्मको मनुष्यः ॥ ४ ॥  
 लग्नेन्दौ केतुसंयुक्ते लग्नेशे निधनं गते ॥  
 मारकेशयुतेदृष्टे जातः स्यान्निर्धनो नरः ॥ ५ ॥  
 षष्ठाष्टमव्ययगते लग्नेशे पापसंयुते ॥  
 मारकेश युतेदृष्टे राजवंशेपि निर्धनः ॥ ६ ॥  
 विलग्ननाथे रविणा सरिष्फनाथेन युक्ते यदि पापदृष्टे ॥  
 मित्रात्मजेनाथ युतेथदृष्ट शुभैर्नदृष्टे स भवेद्हरिद्रः ॥ ७ ॥



मन्त्रेशोघर्मनाथश्च षष्ठे वाखेस्थितौ क्रमात् ॥  
 दृष्टौ चेन्मारकेशेन जातः स्यान्निर्धनोनरः ॥ ८ ॥  
 यद्भावेशे रन्ध्ररिष्कारिसंस्थे यद्भावस्था रन्ध्ररिष्कारिनाथाः ॥  
 पापैर्दृष्टावायुतास्तस्यनाशंदुःखाक्रान्तोनिर्धनश्चञ्चलः स्यात् ९  
 चन्द्राक्रान्तनवांशेशो मारकेशयुतो यदि ॥  
 मारकस्थानगोवापि जातस्यान्निर्धनोनरः ॥ १० ॥  
 पापग्रहे लग्नगते भाग्यकर्माधिपौ विना ॥  
 मारकेशयुतेदृष्टे जातः स्यान्निर्धनोनरः ॥ ११ ॥  
 विलग्नशनवांशेशो रिष्कषष्ठाष्टगो यदि ॥  
 मारकेशयुतोदृष्टो जातः स्यान्निर्धनोनरः ॥ १२ ॥  
 धने संस्थौच भौमेन्दू कथितौ धननाशकौ ॥  
 बुधेक्षितौ महावित्तं कुरुतस्तद्गतः शनिः ॥ १३ ॥  
 निः स्वतां कुरुते तत्र रविर्नित्यं यमेक्षितः ॥  
 महाधनयुतं ख्यातं शन्यदृष्टः करोत्यसौ ॥ १४ ॥  
 धनभावगताः सौम्याः कुर्वन्त्येवधनं बहु ॥  
 बुधदृष्टो गुरुस्तत्र निर्धनं कुरुतेनरम् ॥ १५ ॥  
 बुधश्चन्द्रेक्षितस्तत्र सर्वस्वं हन्ति निश्चितम् ॥  
 एतद्विविबुधैश्चिन्त्यं बलावलविचारतः ॥ १६ ॥

॥ इति तृतीयपरिच्छेदः ॥



वक्ष्येहं सारमुद्धृत्य उयोतिः शास्त्राम्बुधेस्ततः ॥  
 दशासौख्यप्रदानृणां ग्रहाणां दृष्टियोगतः ॥ १ ॥  
 तनुनित्यसनादेयास्तथाधान्यासटासना ॥  
 नरेति संख्या विज्ञेयाः क्रमात्सूर्यादिरश्मयः ॥ २ ॥  
 स्वदशारामगुणिता तद्वशागुणिता पुनः ॥  
 खरामभागतो लब्धं फलं मासादिकं भवेत् ॥ ३ ॥  
 अन्तर्दशां विनिष्कृत्य सर्वाः सम्मीत्य यत्नतः ॥  
 अरण्येन हरेल्लब्धं दिनं तत्तद्वशाफलम् ॥ ४ ॥  
 खगुणेन हताल्लब्धमन्तरान्तर्दशा भवेत् ॥  
 एवं सूक्ष्मदशां ज्ञात्वा तथा प्राणदशामपि ॥ ५ ॥  
 आहुः शुभाशुभफलं नृणां कालविदोजनाः ॥  
 एतत्कृते निर्णयिते ह्यायुषो निश्चयो भवेत् ॥ ६ ॥  
 पञ्चमेशदशायान्तु धर्मपस्य दशातु या ॥  
 अतीवशुभदा प्रोक्ता कालविद्भिर्मुनीश्वरैः ॥ ७ ॥  
 समन्त्रनाथस्य तपोधिपस्य दशः शुभा राज्यसुतप्रदा स्यात् ॥  
 सर्कार्तिनाथस्य सुखेश्वरस्य दशा तथा प्राहुरुदारचित्ताः ॥ ८ ॥  
 पञ्चमेशेनयुक्तस्य ग्रहस्य शुभदा दशा ॥  
 तथा धर्मपयुक्तस्य दशा परम शोभना ॥ ९ ॥  
 पाददृष्टस्य खेटस्य दशा हानिकरामता ॥  
 शुभयुक्तस्य खेटस्य दशाद्रव्यप्रदा भवेत् ॥ १० ॥



सपञ्चमेशलग्नेशदशा राज्यप्रदायिनी ॥

तथाधर्मपयुक्तस्य लग्नपस्य दशामता ॥ ११ ॥

सपञ्चमेशस्य तपोधिपस्य दशाभवेद्राज्यसुखार्थलाभदा ॥

तथैव भानाधिपसंयुतस्य सुतेश्वरस्यापि दशा शुभा स्यात् १२

पञ्चमेशेनयुक्तस्य मानेशस्यदशाशुभा ॥

सुखेशसहितस्यापि धर्मेशस्य दशाशुभा ॥ १३ ॥

तथा शुभस्थानगमानपस्य तथैव मानार्थसुखप्रदास्यात् ॥

दशानृणां सौख्यकरीभवेद्धि सुखेशयुक्तस्य च मानपस्य १४

षष्ठस्य सप्तमस्यैकोनायको मानराशिगः ॥

दशातस्य शुभाज्ञेया तथा तेन युतस्य च ॥ १५ ॥

एको द्विसप्तमस्थाननायको यदि सौख्यगः

तेनयुक्तदशा ज्ञेया शुभदार्हुर्मनीषिणः ॥ १६ ॥

षष्ठाष्टमव्ययाधीशाः पञ्चमाधिपसंयुताः ॥

तेषां दशा च शुभदा प्रोच्यते काल वित्तमैः ॥ १७ ॥

सुखेशोमानभावस्थो मानेशः सुखराशिगः ॥

तयोर्दशां शुभामाहुर्ज्योतिः शास्त्रविदो जनाः ॥ १८ ॥

सुखेशमानेशसुतेशधर्मपा एकत्रयुक्तायादियत्रकुत्र ॥

तेषां दशा राज्यफलप्रदास्तैर्युक्तग्रहाणामपिदृश्युतैर्वा ॥ १९ ॥

वाहनस्थानसंयुक्तमन्त्रनाथदशाशुभा ॥

मुखराशिस्थकर्मेशदशाराज्यप्रदायिनि ॥ २० ॥



ताम्यां युक्तस्यखेटस्य दृष्टियुक्तस्यचैतयौः ॥

राज्यप्रदां दशामाहुर्विद्वांशो दैवचिन्तकाः ॥ २१ ॥

कर्मस्थानस्थबुद्धीशदशा सम्पत्करीभवेत् ॥

मानस्थिततपोधीशदशाराज्यप्रदायिनी ॥ २२ ॥

॥ इति चतुर्थपरिच्छेदः ॥

अथवक्ष्ये खगेन्द्राणां भुक्तिं पञ्चविधामहम् ॥

दशाचान्तर्दशा चैव ततोपिविदशा तथा ॥ १ ॥

सूक्ष्मभुक्तिः प्राणदशा एवं पञ्चदशाः स्मृताः ॥

लग्नेशे स्वनवांशस्थे तस्यभुक्तिः शुभावहा ॥ २ ॥

स्वद्वादशांशके लग्ननाथे वा स्वदृकाणगे ॥

तस्य भुक्तिः शुभामाहुर्यवनाः कालवित्तमा ॥ ३ ॥

स्वर्त्रिंशांशे तथा मित्रत्रिंशांशेवस्थितो यदि ॥

तस्यभुक्तिः शुभाप्रोक्ता कालविद्धिर्मनीषिभिः ॥ ४ ॥

मित्रक्षेत्रनवांशस्थे मित्रस्य द्विरसांशके ॥

तस्यभुक्तिः शुभाप्रोक्ता कालविद्धिः मुनीश्वरैः ॥ ५ ॥

बुद्धिक्षेत्रनवांशस्थे पुत्रस्यद्विरसांशके ॥

मित्रद्रेष्काणगेवापि तस्यभुक्तिः शुभावहा ॥ ६ ॥

तपोराशिनवांशस्थे धर्मस्यद्विरसांशके ॥

गुरुद्रेष्काणगेवापि तस्यभुक्तिः शुभावहा ॥ ७ ॥



मुखराशिनवांशस्थे वाहनद्विरसांशके ॥

मुखद्वेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा ॥ ८ ॥

विलग्ननाथस्थितभांशनाथे मित्रांशके मित्रग्रहेणदृष्टे ॥

सुहृदकाणस्यनवांशकेवा तदास्यभुक्तिःशुभदां वदन्ति ॥ ९ ॥

अथवक्ष्ये विशेषेण दशाकष्टप्रदा नृणाम् ॥

षष्ठाष्टमव्ययेशानां दशाकष्टप्रदायिनी ॥ १० ॥

मारकेशेनषष्ठेशे युक्ते लग्नाधिपेतथा ॥

तस्यभुक्तौ ज्वरप्राप्तिः प्राहुःकालविदोजनाः ॥ ११ ॥

सरोगेशः शरीरेशश्चन्द्रषड्वर्गगो यदि ॥

जलदांषः तस्य भुक्तौ स्यादजीर्णो न संशयः ॥ १२ ॥

षष्ठेशयुक्तलग्नेशो बुधषड्वर्गगो यदि ॥

तस्यभुक्तौ भवेद्वायुः वातावा देहजाड्यकृत ॥ १३ ॥

सारिनाथविलग्नेशो गुरुषड्वर्गगो यदि ॥

तस्यभुक्तौ भवेद्रोगः पीडावा ब्राह्मणेन तु ॥ १४ ॥

षष्ठेशोथ विलग्नेशो भृगुषड्वर्गगो यदि ॥

तस्यभुक्तौ भवेत्पीडा रोगः स्त्रीसङ्गमेन च ॥ १५ ॥

सरोगेशो विलग्नेशः शनिषड्वर्गगो यदि ॥

तस्यभुक्तौ भवेद्वातः सन्निपातोथवानृणाम् ॥ १६ ॥

लग्नेशरोगेशपयांभवेन्मारकभुक्तिषु ॥

तदाज्ञेयं महत्कष्टं शस्त्राघातादिकं भयम् ॥ १७ ॥



मृतौस्थिताःसैहिककेतुमन्द महीसुताःस्वासविसूचिकाभिः॥  
 रोगो नराणामथ तस्यभुक्तौ भवेद्यदामारकसंयुतिश्चेत् ॥१८॥  
 एवं भ्रात्रादिभावानां नायको यत्र संस्थितः ॥  
 तत्तत्षड्वर्गयोगेन तत्तद्भावफलं वदेत् ॥ १६ ॥  
 लग्नेशरोगनाथौ च निधनेशेन संयुतौ ॥  
 मारकेशयुतौ क्रूरौ रोगनाथांशगौ यदा ॥ २० ॥  
 तयोर्भुक्तौ विजानीयाद्वयथा शस्त्रेणवा नृणाम् ॥  
 शुभयोगे न वाधास्यात्पापयोगेन मृत्युकृत् ॥ २१ ॥  
 जीवांशजीववर्गेशान् मूलांशान्मूलवर्गतः ॥  
 रोगादीन्प्रवदेत्तत्र तेषांभुक्तिवशात्फलम् ॥ २२ ॥  
 विलग्ननाथस्यनवांशनाथो रन्ध्रांशपस्थानपट्टिष्ट युक्तौ ॥  
 मेषस्य षड्वर्गगतौ यदातौ भुक्तौ तयोर्जम्बुकभीतितोवधः २३  
 ओजवर्गगतौ तौ चेद्व्याघ्राद्भीतिं वदेत् नृणाम् ॥  
 युग्मवर्गगतौ तौ चेत्कपि ना नात्र संशयः ॥ २४ ॥  
 कुलीरवर्गगौ तौ चेद्रासभाद्रभयमादिशेत् ॥  
 सिंहवर्गगतौ तौ चतुर्भुक्तौस्याद्व्याघ्रजं भयम् ॥ २५ ॥  
 अलिर्गगतौभुक्तौ तयोः सारङ्गजं भयम् ॥  
 मेषकार्मुकवस्थौ भुक्त्योः स्यादश्वजं भयम् ॥ २६ ॥  
 कन्यावर्गगतौ चेदमल्लूकादभयमादिशेत् ॥  
 वणिग्वर्गगतौ तौ चेदभुक्तौ तेषां मृगादभयम् ॥२७॥



मृगवर्गगतौ भुक्तौ तयोः कण्टकजं भयम् ॥  
 कुंभवर्ग गतौ तौ चेद्रोलाङ्गूलान्महद्भयम् ॥ २८ ॥  
 मीनवर्गगतौ भुक्तौ मेषाश्चग्रहजं भयम् ॥  
 एवं देहादि भावानां षड्वर्ग गतिभिः फलम् ॥ २९ ॥  
 लग्नेश्वरोरन्ध्रपतिश्चयुक्तौ वृषेवृषांशे वृषमदृकाणे ॥  
 स्थितौ भवेतां यदिवा वृषेण घातात्तयोर्वा मरणं हिभुक्तौ ३०  
 वृषेयुग्मांशगतौ चेद्व्याघ्रस्याघातजं भयम् ॥  
 वृषेतुलांशगतौ चेत्कपिना नात्र संशयः ॥ ३१ ॥  
 वृषेतुलांशगतौ चेद्व्याघ्राद्वाघाततोमृतिः ॥  
 वृषे कौर्ष्यांशगतौ चेदश्वात्पीडा प्रजायते ॥ ३२ ॥  
 वृषेमृगांशगतौ चेन्माहिषेणमृतिर्भवेत् ॥  
 वृषेमृगांशगतौ चेद्रोलांगूलान्मृतिं वदेत् ॥ ३३ ॥  
 वृषे मीनांशगतौ चेत्तयोर्भुक्तौ मृगाद्भयम् ॥  
 एवं निश्चित्यमतिमान् पित्रादीनां मृतिं वदेत् ॥ ३४ ॥  
 शरीरनाथो मरणाधिपेन युक्तो मृगेन्द्रे तु मृगाधिपांशे ॥  
 तयोर्विपाके भयमाखुना मृतिं सर्पात्तदाप्राहु रुदारचित्ताः ३५  
 सिंहे कन्यांशगतौ चेत्कपिना च तदामृतिः ॥  
 मृगराजे तुलांशस्थौ तयोर्भुक्तौ मृतिं वदेत् ॥ ३६ ॥  
 अल्यंशगतौ मृगेन्द्रे च तयोर्दाये सरीसृपात् ॥  
 चापांशगतौ यदासिंहे तद्वर्षेश्वान्मृति वदेत् ॥ ३७ ॥



मृगांशगौ मृगेन्द्रे च तयोर्दायेखरान्मृतिः ॥  
 कुभांशकगतौ तौचेन्मृगराजे नृपाद्भयम् ॥ ३८ ॥  
 मीनांशकगतौ सिंहे सारङ्गाद्भयमेतयोः ॥  
 सिंहेमेषांशगौतौ चेद्रोमाथोर्भयमादिशेत् ॥ ३९ ॥  
 वृषांशगौ च सूर्यर्क्षे तयोर्दायेशुनामृतिः ॥  
 युग्मांशगौतौ सिंहे च गोलाङ्गूलाद्भयं तयोः ॥ ४० ॥  
 कर्काशगौतौ सिंहेतुह्याभिदाहान्मृतिगृहे ॥  
 एवं भ्रात्रादिभावानां तत्तद्भुक्तौ मृतिं वदेत् ॥ ४१ ॥  
 देहाधिपो मृत्युपसंयुतश्च चापांशगौ कार्मुकराशिगौ चेत् ॥  
 दाये तयोर्त्राजिकृतं च मृत्युवदन्तितत्कालविदोमहन्ताः ४२  
 चापे मृगांशगौतौचेत्सारंगाद्भयमेतयोः ॥  
 हये कुंभांशगौतौ चेद्वराद्भयमादिशेत् ॥ ४३ ॥  
 हये मीनांशगौ नोचेत्पाके नक्राद्भयं भवेत् ॥  
 मेषांशगौतौचापेतु तयोर्दाये चतुष्पदात् ॥ ४४ ॥  
 हये वृषांशगौतौ चेद्रासभाद्भयमादिशेत् ।  
 युग्मांशगौतु चापेतु वानराद्भयमादिशेत् ॥ ४५ ॥  
 कर्काशगौ हयाङ्गेतु चाखुना भयमेतयोः ।  
 सिंहांशगौ हयाङ्गेतु जम्बुकाद्भयमादिशेत् ॥ ४६ ॥  
 कन्यांशगौतु चापेतु गोलाङ्गूलाद्भयं वदेत् ॥  
 तुलांशगौ हयाङ्गेतु उष्ट्रान्मरणमेतयोः ॥ ४७ ॥



अल्यंशगौ ह्यंगेतु तयोर्दाये सरिसृपात् ।  
 एवं भ्रात्रादिभावानां फलमाहुर्मनीषिणः ॥ ४८ ॥  
 विलग्नपो नैधननायकश्च मृगे मृगंशावगतौ च युक्तौ ॥  
 प्रीतिर्भवेदाशुतयोर्हि मुक्तौ विवाहहेतुः प्रवदन्तिसन्तः ॥ ४९ ॥  
 कुंभाशगौ मृगांगे च भल्लूकाद्भयमादिशेत् ॥  
 श्पाशगौ मृगांगे च सारङ्गाद्भयमेतयोः ॥ ५० ॥  
 युग्मांशगौ मृगांगे तौ हरिणान्मृतिरेतयोः ॥  
 कर्काशगौ मृगस्ये तौ तयोर्दाये मृतिर्गजात् ॥ ५१ ॥  
 कौर्प्याशगौ मृगास्येतु नकूलान्मृतिरेतयोः ॥  
 चपांशगौ मृगास्ये तौ मार्जारान्मृतिरादिशेत् ॥ ५२ ॥  
 एवं निश्चित्यमतिमान् पीत्रादीनां फलं वदते ॥ ५३ ॥

इति निधनहेतुः पञ्चमपरिच्छेदः ।

अथवक्ष्ये खगेन्द्राणां जातिभेदात्फलागमम् ॥  
 बालानां बोधनार्थाय सारं संगृह्यशास्त्रतः ॥ १ ॥  
 विप्रैर्देवेभ्यभृगुजौ क्षत्रियौ रविभूमिजौ ॥  
 वैश्यौ निशाकरवुधौ शनिः शूद्रस्तमोन्त्यजः ॥ २ ॥  
 मीनादयः क्रमादेते विप्रक्षत्रविशोऽग्निजाः ॥  
 एतेषां दृष्टियोगाभ्यां फलमाहुर्मनीषिणः ॥ ३ ॥



सूर्योगुरु कुजः सोमो गुरुर्ज्ञश्च सितः शनिः ॥

गुरुश्चन्द्रेज्यमन्दाश्चकुजश्च भावकारकाः ॥ ४ ॥

मतान्तरेण ।

पिता रविर्मातृकरः शशाङ्को भ्रातावुधार्की भृगुनन्दनश्च  
भौमः सुतो मित्रग्रहो रविः स्याच्छुभग्रहौ राहुशनैश्चरौस्तः ५

प्रकारान्तरेण ।

पितारविर्मातृकरः शशाङ्को भ्राता कुजो मातुलवर्गसौम्यः ॥

पुत्रो गुरुः भर्गवकामीनीशो मित्रोरवी राहुशनी च शत्रूः ॥ ६ ॥

शनिभौमौ पितृक्षेत्रे पक्षा जीवज्ञभार्गवाः ॥

मातुर्भावे तु राजानौ रविचन्द्रमसौ स्मृतौ ॥ ७ ॥

भूसूनुर्नायको ज्ञेयो बुधः सूनुः प्रकीर्तितः ॥

सचिवौ भृगुजीवौ च दृष्टियोगाफलं पृथक् ॥ ८ ॥

शनिं च मेषे पितरमाहुः कालविदो जनाः ॥

ग्रहाणां फलदातृत्वं तत्तत्पाके विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥

यद्भाववेशो यस्य षड्वर्गसंस्थस्तत्तत्पाके द्रव्यलाभो नराणाम्

यत्तद्द्रव्यं तस्य खेटस्य विन्ध्यात्तत्तद्द्रव्यं तस्य पाके वदन्ति १०

पाकेशे भास्करांशस्थे भूपान्मानं विनिर्दिशेत् ॥

अथवा पितृवर्गाद्वा चन्द्रांशान्मातृगतः ॥ ११ ॥

कुजांशात्पुत्रवर्गेण नायकाद्वा फलं वदेत् ॥

सौम्यांशाद्मातृवर्गेण राजपुत्रेण वा फलम् ॥ १२ ॥



गुवंशे मातृवर्गेशात् सचिवाद्वाफलं वदेत् ॥  
 शुक्रांशान्मातृवर्गेण स्त्रीवर्गाद्वाफलं वदेत् ॥ १३ ॥  
 शन्यंशाच्छूद्रवर्गेण प्रेषवर्गात्फलं तथा ॥  
 राहोः फलं शूद्रवर्गात्केचिदाहुर्मनीषिणः ॥ १४ ॥  
 पाके फलं पैतृकं न भवेच्चशनिभौमयोः ॥  
 पाके जीवज्ञशुक्राणां मातुलाद्भृत्यवर्गतः ॥ १५ ॥  
 दशाविपाके सुरपूजितस्य ब्रह्मत्वतः ब्राह्मणजातिमूलात् ॥  
 अंशानुरूपं फलमाहुरार्या पाके दशायाश्च वदन्तिधीराः ॥ १६ ॥

इति षष्ठपरिच्छेदः

फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण विवृणमहे ॥  
 दशाविशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरीमाता ॥ १ ॥  
 कृत्तिकर्क्षगणस्तत्र यावज्जन्मर्क्षगं तथा ॥  
 नवभिश्च हरेद्भागंशेषन्तु स्वदशाभवेत् ॥ २ ॥  
 रवौ रस त्रिधौ पंक्ति भौमे सप्त विधुन्तुदे ॥  
 अष्टादश सुराचार्ये षोडशैकोनविंशतिः ॥ ३ ॥  
 शनौ सप्तदशं सौम्ये शिखिः सप्तप्रकीर्तितः ॥  
 नखाःशुक्रस्य विज्ञेया विंशोत्तरशतं मतम् ॥ ४ ॥  
 रव्यादीनां दशागुण्या त्रिभिः स्वस्वदशाहताः ॥  
 घस्त्राद्यन्तर्दशामान विंशोत्तरशतात्मके ॥ ५ ॥



मन्दसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ ॥  
 न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः ॥ ६ ॥  
 परतन्त्रस्य जीवस्य पापकर्मापि निश्चितम् ॥  
 कविः साक्षान्निहन्तास्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ ७ ॥  
 मन्दादयो न हन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः ॥  
 शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियोद्भवे ॥ ८ ॥  
 जीवशुक्रेन्दवः पापाः शुभौशनिशशीसुतौ ॥  
 राजयोगकरः साक्षादेकएव रवेः सुतः ॥ ९ ॥  
 जीवादयो ग्रहाः पापाः सन्तिमारकलक्षणः ॥  
 बुधैस्तत्रफलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः ॥ १० ॥  
 भौमजीवारुणाः पापा एकएवकविः शुभः ॥  
 शनैश्चरेणजीवस्य योगो मेषभवो यथा ॥ ११ ॥  
 नायं शशी निहन्तरस्यादुन्मिषत्पापनिष्फलम् ॥  
 ज्ञातव्यानि द्वन्द्वजस्य फलान्येतानिसूरिभिः ॥ १२ ॥  
 भार्गवेन्दुसुतापापौ भूसुताङ्गिरसौशुभौ ॥  
 एकएव भवेत्साक्षाद्भूसुतो योगकारकः ॥ १३ ॥  
 निहन्ता कविरन्येतु पापिनो भारकाह्वयाः ॥  
 कुलीरसंभवस्यैवं फलान्युद्भूतानि सूरिभिः ॥ १४ ॥  
 रोहिण्येयसितौ पापौ कुजजीवो शुभावहौ ॥  
 प्रभवेद्योगमात्रेण नशुभं कुजशुक्रयोः ॥ १५ ॥



घ्नन्ति सौम्यादयः पापाः मारकत्वेनलाक्षिताः ॥  
 एवं फलानिबेद्यानि सिंहजस्य मनीषिभिः ॥ १६ ॥  
 कुजजीवेन्दवः पापाः एक एवभृगुः शुभः ॥  
 भार्गवेन्दुसुतावेव भवेतां योगकारकौ ॥ १७ ॥  
 नहन्ताकविरन्येतु मारकास्ते कुजादयः ॥  
 प्रतिक्ष्येत फलान्युक्तान्येवं कन्याभवस्यहि ॥ १८ ॥  
 जीर्वाकभूसुताः पापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ ॥  
 भवेतां राजयोगस्यकारकौ चन्द्रचन्द्रजौ ॥ १९ ॥  
 कुजोनिहन्ता जीवाद्याः परे मारकलक्षणाः ॥  
 निहन्तारः फलान्येवं ज्ञातव्यानि तुलाभुवः ॥ २० ॥  
 सौम्यभौमसिताः पापाः शुभौगुरुनिशाकरौ ॥  
 सूर्यचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ ॥ २१ ॥  
 जीवो न हन्ता सौम्याद्याः परे मारक लक्षणाः ॥  
 तत्तत्फलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः ॥ २२ ॥  
 एक एव ऋविः पापः शुभौ भौमदिवाकरौ ॥  
 योगो भास्करसौम्याभ्यां नतु हन्तांशुमान्सुतः ॥ २३ ॥  
 घ्नन्ति शुक्रादयः पापा मारकत्वेन लाक्षिताः ॥  
 ज्ञातव्यानि फलान्येवं धनुषश्च मनीषिभिः ॥ २४ ॥  
 कुजाजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गव चन्द्रजौ ॥  
 सूर्यचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ ॥ २५ ॥



तल्लक्षणा निहन्तारः कविरेकः सुयोगकृत् ॥  
 ज्ञातव्यानि फलान्येवं बुधैश्च मृगजन्मनः ॥ २६ ॥  
 जीवचन्द्रकुजाः पापा एकोदैत्यगुरुः शुभः ॥  
 राजयोगकरोभौमः कविरेवं वृहस्पतिः ॥ २७ ॥  
 निहन्ता घ्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन लक्षिताः ॥  
 एवमेव फलान्युद्धान्येवं हि घटजन्मनः ॥ २८ ॥  
 मन्दशुक्रांशुमत्सौम्याः पापाः भौमविधू शुभौ ॥  
 महीसुतगुरु योगकारकौ नैव भूसुतः ॥ २९ ॥  
 मारको मारकाभिज्ञौ मन्दज्ञौ घ्नन्ति पापिनौ ॥  
 इत्युद्धानि बुधैस्तत्र फलानि ज्ञप्ति जन्मनः ॥ ३० ॥  
 एतच्छास्त्रानुसारेण मारकान्निर्दिशेद्बुधः ॥  
 चन्द्रसूर्यौ विनासर्वे मारकाः परिकीर्तिताः ॥ ३१ ॥  
 स्वदशायां स्वभुक्तौ च नराणां निधनं नहि ॥  
 क्वचिद्दशायामिच्छन्ति स्वभुक्तौ न कदाचन ॥ ३२ ॥

इति सप्तम परिच्छेदः ।

लभाच्चिन्त्यं मूर्तिकीर्तिसांगोपाङ्गानिरूपणम् ॥  
 स्थितिस्वरूपसम्पत्तिर्जन्मलग्नगतं फलम् ॥ १ ॥  
 धनं सुखं च भुक्तिं च सत्यं च बहुवक्तृतम् ॥  
 सव्यनेत्राल्पहारश्च धनस्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ २ ॥



भ्रातृकण्ठौ विक्रमश्च क्षुधाभरणपात्रवान् ॥

भ्रातृस्थानफलं नाम तत्तन्नाम फलं दिशेत् ॥ ३ ॥

बन्धुवाहनमातृश्च सिंहासनसुखं गृहाः ॥

मित्रवाहुरिदं नाम बन्धुस्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ ४ ॥

पुत्रो बुद्धिश्च मित्रं च देवताभक्तिरुत्तमा ॥

हृदयमातुलश्चैव सुतस्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ ५ ॥

रिपुज्ञातिबलं रोगमुदरं शत्रुरेव च ॥

षष्ठस्थानमिदं नाम तत्तन्नामफलं दिशेत् ॥ ६ ॥

कलत्रभोगश्छत्रं च दन्तानाभिश्च रोगवान् ॥

गुदं संकरके चैव आयुः स्थानाद्विचिन्तयेत् ॥ ७ ॥

भाग्यं तीर्थं च धर्मं च पितृस्थानमितिक्रमात् ॥

मानराज्यत्यक्तकीर्तिः कर्मव्यापारमेव च ॥ ८ ॥

लाभं च ज्येष्ठभ्रातृश्च कर्णजङ्घमितिक्रमात् ॥

रिष्कव्ययं पितृधनं वादयोषादिनाम च ॥ ९ ॥

कुंभकर्कटगोमीन मकरालितुलाधराः ॥

सजलाराशयः प्राक्ता निर्जलाशेषराशयः ॥ १० ॥

रवि भौमार्कजाः शुक्राः सजलौ चन्द्रमार्गवौ ॥

कुजवाचस्पतीज्ञेयौ सजलौ जलराशिगौ ॥ ११ ॥

इति मिश्रप्रकरणमष्टमपरिच्छेदः समाप्तश्चायंग्रन्थः ।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA

JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR

LIBRARY

Jangamawadi Math, Varanasi

Acc. No. .... 1929















